सम्पादकीय
यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता। 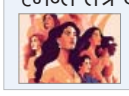 2

मध्य प्रदेश में गाँव-गाँव पहुँच रही हैं जन्मशताब्दी श्रद्धा संवर्धन यात्राएँ 3

युवा पीढ़ी को प्रगतिशील प्रेरणाएँ देकर कर रहे हैं दिव्य भारत का निर्माण 4

आदरणीय डॉक्टर चिन्मय पण्ड्या जी का ओडिशा व छत्तीसगढ़ प्रवास 6–7

वसंत पंचमी
वसंत तमस को तोड़ने आता है, आप भी अपने को बदल लीजिए 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 मार्च 2024

वर्ष : 36, अंक : 17
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 27 फरवरी 2024
वार्षिक चंदा : ₹ 80/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-
प्रति अंक : ₹ 4/-

विचार विस्तार वर्ष

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

थको मत, रुको मत, हारो मत

जब संसार में सभी साथी मनुष्य का साथ छोड़ दें, पराजय और पीड़ाओं के दंश मनुष्य को घायल कर दें, पैरों के नीचे से सभी आधार खिसक जायें, जीवन के अन्धकारयुक्त बीहड़ पथ पर यात्री अकेला पड़ जाये, तो भी क्या वह जीवित रह सकता है? कुछ कर सकता है? पथ पर आगे बढ़ सकता है? अवश्यमेव। यदि वह स्वयं अपने साथ है तो कोई शक्ति उसकी गति को नहीं रोक सकती। कोई भी अभाव उसकी जीवन यात्रा को अपूर्ण नहीं रख सकता। मनुष्य का अपना आत्मविश्वास ही अकेला इतना शक्तिशाली साधन है, जो उसे मंजिल पर पहुँचा सकता है, विजय की सिद्धि प्राप्त करा सकता है।

कवीन्द्र रवीन्द्र का 'अकेला चल' शीर्षक वाला गीत आपने पढ़ा या सुना होगा। उस गीत के भाव हैं-

''यदि कोई तुझसे कुछ न कहे, तुझे भाग्यहीन समझ कर सब तुझसे मुँह फेर लें और सब तुझसे डरें, तो भी तू अपने खुले हृदय से अपना मुँह खोल कर अपनी बात कहता चल।''

''अगर तुझसे सब विमुख हो जायें, यदि गहन पथ प्रस्थान के समय कोई तेरी ओर फिर कर भी न देखे, तब पथ के काँटों को अपने लहू-लुहान पैरों से दलता हुआ अकेला चल।''

''यदि प्रकाश न हो, झंझावात और मूसलाधार वर्षा की अंधेरी रात में जब अपने घर के दरवाजे भी तेरे लिए लोगों ने बन्द कर दिए हों, तब उस वज्रानल में अपने वक्ष के पिंजर को जलाकर उस प्रकाश में अकेला ही जलता रह।''

निसन्देह हर परिस्थिति में मनुष्य का एक मात्र साथी उसका अपना आपा ही है। स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में *''आत्मविश्वास सरीखा दूसरा मित्र नहीं, आत्मविश्वास ही भावी उन्नति की प्रथम सीढ़ी है।''* सचमुच आत्मविश्वास के कारण दुर्गम पथ भी सुगम बन जाता है। बाधायें भी मंजिल पर पहुँचाने वाली सीढ़ियाँ बन जाती हैं। एमर्सन ने कहा है- *''आत्मविश्वास सफलता का मुख्य रहस्य है।''*

आत्मविश्वास मनुष्य को तुच्छता से महानता की ओर अग्रसर करता है, सामान्य से असामान्य बना देता है। स्वेट मार्डेन ने कहा है-*''आत्मविश्वास की मात्रा हममें जितनी अधिक होगी, उतना ही हमारा सम्बन्ध अनन्त जीवन और अनन्त शक्ति के साथ गहरा होता जाएगा।''*

आत्मविश्वास का जादूई प्रभाव

आत्मविश्वास-परमात्मा पर विश्वास करना है, जिसकी शक्ति अजेय है, अनन्त है। जो अपने आप पर विश्वास करता है, अपनी बागडोर उसके हाथों सौंप देता है,

अपना आत्मविश्वास बढ़ाओ

युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी

(अखण्ड ज्योति, सितम्बर 1964 पृष्ठ 15 से संकलित, सम्पादित)

उस पर संसार विश्वास करता है। संसार भर में नेतृत्व, शासन, पथ-प्रदर्शन वे ही करते हैं, जिन्हें अपने आप पर महान विश्वास होता है। अपने ऊपर अपार विश्वास रखकर ही वे संसार को प्रभावित करते हैं।

आत्मविश्वास के बल पर एक मनुष्य अफ्रीका के जंगलों में से भी भयंकर जंगली शेर को पकड़ लाता है, हिंसक जन्तुओं के बीच खड़ा होकर उन्हें नचाता है, लेकिन आत्म-विश्वासहीन व्यक्ति शहर के बीच एक कुत्ते से भी डर जाता है। बन्दर भी उसे भयभीत कर देता है। वस्तुतः सभी मनुष्यों का शरीर एक-सा ही होता है, किन्तु जिस व्यक्ति के चेहरे से, आँखों से आत्मविश्वास का अपार तेज प्रवाहित होता है, जिसके हृदय में आत्मविश्वास का सम्बन्ध है, उसके समक्ष हिंसक जन्तु भी पालतू-सा बनकर दुम हिलाने लगता है। उसका वह तेज ही दूसरों पर जादू-सा असर डाल देता है।

कोलम्बस जब पृथ्वी की परिक्रमा करने चला था, उसके दुर्बल हृदय साथियों ने उसका साथ छोड़ दिया। उन्होंने उसे बुरा-भला कहकर वापिस लौट जाने की सलाह दी, लेकिन उसका एक अजेय आत्मविश्वास नहीं टूटा और उसने नई दुनियाँ की खोज की; पृथ्वी को गोल सिद्ध किया। नैपोलियन की सेना रुक गई आल्पस पर्वत को देखकर। उसके सेनानियों को कोई मार्ग नहीं मिला, लेकिन यह दुर्भेद्यता नैपोलियन के अथाह आत्मविश्वास के लिए बाधा नहीं बन सकी। उसने कहा-''कुछ भी हो, हमें आल्पस पर होकर मार्ग निकालना है।'' और सचमुच उस विशाल पहाड़ को काट-छाँट कर मार्ग बना लिया गया।

भगवान राम ने अजेय आत्मविश्वास के बल पर ही वनवास की विपत्तियों को सहते हुए रावण से लोहा लिया। महात्मा गाँधी के अथाह आत्मविश्वास ने विशाल ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंका। इसके विपरीत ऐसे भी लोग हैं, जो अपने ऊपर होने वाले सामाजिक, राजनीतिक जुल्मों को चुपचाप सहन कर लेते हैं। उनमें बुराइयों से लड़ने के लिए नपुंसक की तरह कोई पौरुष नहीं रहता। महर्षि दयानन्द ने उस समय, जबकि सारा देश रूढ़िवाद, अन्धविश्वास, कुरीतियों, आडम्बरों में डूबा हुआ था, इनके विरुद्ध क्रान्ति की आवाज उठाई। उस समय अपने मिशन के लिए वे अकेले ही थे,

पुणे निवासी साईं सुधीर कावड़े ने मात्र 12 वर्ष की उम्र में 5634 मीटर की ऊँचाई पर स्थित माउंट एवरेस्ट के बेस कैम्प में लहराया तिरंगा

लेकिन उनके अपार आत्मविश्वास ने राष्ट्र को नया मार्ग दिखाया। संसार का एक भी महापुरुष, यदि उसके जीवन से आत्मविश्वास की सामर्थ्य निकाल दी जाए, तो वह कुछ भी नहीं बचता।

समस्त सफलताओं का आधार

मनुष्य कितना ही विद्वान, गुणवान, शक्तिशाली क्यों न हो, यदि उसमें आत्मविश्वास की भावना नहीं है तो वह विद्वान होकर भी मूर्खों-सा जीवन बितायेगा, शक्तिशाली होकर भी कायर सिद्ध होगा।

आत्मविश्वास मनुष्य के कार्य कलाप, उसके जीवन, व्यवहार गति आदि में एक प्रकार की चैतन्यता, जीवट भर देता है। उसके समस्त जीवन को प्राणवान बना देता है। ऐसा व्यक्ति दूसरों को देखने मात्र से अपना प्रभाव डालता है और लोग उस पर विश्वास करने लगते हैं। उसमें एक प्रकार की दिव्यता, महानता-सी मालूम पड़ती है। यह और कुछ नहीं, उसका अपना अपार आत्मविश्वास ही होता है। जो अपने पर विश्वास नहीं रख सकता, उस पर दूसरे भी विश्वास नहीं करते, न उसे कोई महत्त्व देते हैं।

एक-सी परिस्थितियाँ, एक-से साधन, सम्पत्ति, शिक्षा, शक्ति होने पर भी कुछ व्यक्ति महान बन जाते हैं और उनके दूसरे साथी जीवन की सामान्य आवश्यकतायें भी पूरी नहीं कर पाते। उन्हें दर-दर भटकना पड़ता है, पराधीनता, तिरस्कार का जीवन बिताना पड़ता है। इसका कारण आत्मविश्वास का अभाव ही है। आत्मविश्वास वह ज्योति है, जिससे मनुष्य का व्यक्तित्व उसके गुण, कर्म, स्वभाव, जीवन सब प्रकाशयुक्त बन जाते हैं और सर्वत्र अपनी आभा छिटकाते हैं, जबकि आत्मविश्वास हीन व्यक्ति निर्वीर्य, निस्तेज, हीन जीवन बिताता है।

एक शक्तिशाली, सामर्थ्यवान व्यक्ति के मन में जब आत्मविश्वास नष्ट होने लगता है तो संसार में उसके जमे हुए पैर भी उखड़ने लगते हैं। सुरक्षित चट्टान पर खड़ा होते हुए भी वह वहाँ से लुढ़कने लगता है। भवसागर के थपेड़ों से आहत होकर वह उसकी लहरों में ही डूबने, उतरने लगता है। इसके विपरीत एक आत्मविश्वासी जीवन के झंझावातों में दृढ़ खड़ा रहता है, विपरीतताओं में भी सन्तुलित और शान्त रहकर निरन्तर आगे बढ़ता रहता है। वह अभाव एवं विरोध सहन करके भी अकेला ही मंजिल तक पहुँचता है। निर्धन का धन, असहाय का सहायक, अशक्त की सामर्थ्य यदि कोई है तो वह उसका आत्मविश्वास ही हो सकता है। अन्य कोई भी शक्ति नहीं जो मनुष्य को बना सके या बिगाड़ सके।

आत्मविश्वास मनुष्य की शक्तियों को संगठित करके उन्हें एक दिशा में लगाता है। शारीरिक, मानसिक शक्तियाँ आत्मविश्वासी के इशारे पर नाचती हैं और काम करती हैं। जो अपनी शक्तियों का स्वामी है, नियन्त्रण कर्त्ता है, उसे संसार में कोई भी कमी नहीं रहती। सिद्धि, सफलताएँ स्वयं आकर उसके दरवाजे खटखटाती हैं।

सर्वोत्तम धन है आत्मविश्वास

निर्बल, असहाय, दीन, दुःखी, दरिद्र कौन? वह जिसका आत्मविश्वास मर चुका है। भाग्यहीन कौन? वह जिसका अपने विश्वास ने साथ छोड़ दिया है। वस्तुतः आत्मविश्वास जीवन नैया का एक शक्तिशाली समर्थ मल्लाह है, जो डूबती नाव को प्रबल लहरों से पार कर देता है। आत्मविश्वासहीन व्यक्ति जीवित होता हुआ भी मृततुल्य है, क्योंकि उत्साह, तेज, शक्ति, साहस, स्फूर्ति, आशा, उमंग के साथ जीना ही जीवन है और यह वहीं रहते हैं, जहाँ आत्मविश्वास होता है।

अतः जीवन में सफल होना है, विजयी बन कर जीवन बिताना है, संसार में ढकेले जाने वाले नहीं, वरन संसार को गति देने वाले बन कर रहना है, जीवन के उतार-चढ़ाव, हार-जीत के द्वंद्वों में कठिनाई, उलझनों और झंझाओं में स्थिर रहना है, संसार पर अपनी छाप छोड़ कर जाना है, आशा और उमंग का जीवन बिताना है, तो अपने आत्मविश्वास को जगाइये, उसे विकसित कीजिए। स्मरण रखिए, आत्मविश्वासी के लिए ही संसार स्थान देता है। जो अपने आपको महत्त्वपूर्ण नहीं मानता, उसे संसार भी ढकेल कर एक ओर कर देता है।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च 2024

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता

जब देवत्व बढ़ाया जाएगा, तभी स्वर्ग धरा पर आएगा

नारी देश की शान है

कर्त्तव्य पथ पर परेड का नेतृत्व करती नारी, चाँद और सूरज को छूने की करिश्माई सफलताओं में अग्रणी योगदान देती नारी, राजनीति में राष्ट्र का नेतृत्व करती नारी, खेलों में तमगे जीतने में अग्रणी भूमिका निभाती नारी, चिकित्सा, सुरक्षा, सेना, व्यवसाय, कला, विज्ञान; जीवन के हर क्षेत्र में देश का गौरव बढ़ाती नारी, नारी देश की शान है। देश ही नहीं, विश्व के अनेक देशों में शासन की कमान सँभालने से लेकर विविध क्षेत्रों में पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही नारी आने वाले कल की पहचान है।

परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने कई दशक पहले 'इक्कीसवीं सदी उज्ज्वल भविष्य' और 'इक्कीसवीं सदी नारी सदी' का उद्घोष किया था, जो आज चरितार्थ होता स्पष्ट दिखाई दे रहा है। यह उनकी भविष्यवाणी मात्र नहीं थी, बल्कि युग स्रष्टा ऋषि के रूप में उनका संकल्प था, जिसे पूरा करने के लिए उन्होंने प्रचण्ड तप किया और उसके लिए आवश्यक वातावरण भी तैयार किया। इतिहास साक्षी है कि पाँच-छः दशक पहले तक जो नारी गायत्री के अधिकार से वंचित थी, वही आज पुरोहित के रूप में समाज में सद्विचारों की, सद्भावों की, संस्कारों की सरिता प्रवाहित कर रही है। इतना ही नहीं, ऐसे ढेरों उदाहरण हर क्षेत्र में मिल जाएँगे जहाँ गायत्री उपासक, आध्यात्मिकता से ओतप्रोत संस्कारवान देवियों ने अपने घर-परिवार में क्रान्तिकारी परिवर्तन किए हैं।

इन दिनों पूरे विश्व में नारी सशक्तीकरण पर बल दिया जा रहा है। अपने देश में महिलाओं को आरक्षण देने से लेकर नारी शिक्षा, नारी स्वावलम्बन जैसे नारी उत्कर्ष के लिए अनेक कदम उठाये जा रहे हैं। अधिकांश सरकारी योजनाओं में नारी सशक्तीकरण को ही प्राथमिकता दी जा रही है। गरीबों को पक्के मकान देना हो, उज्ज्वला योजना, हर घर नल से जल, नारी के अधिकारों की रक्षा के लिए कानून बनाना जैसी अधिकांश योजनाओं के केन्द्र में नारी सशक्तीकरण का दृष्टिकोण दिखाई देता है।

यह सच है कि आधी आबादी के दबी-कुचली स्थिति में रह जाने से देश की प्रगति और समृद्धि पर बहुत प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। आर्थिक दृष्टि से भी बड़ा नुकसान समाज की मनःस्थिति पर देखा गया है। शरीर का अर्धांग यदि लकवा ग्रस्त हो जाये तो पूरा शरीर ही अशक्त हो जाता है। गाड़ी का एक पहिया खराब हो जाये तो वह अपनी मंजिल कहाँ पूरी कर पाती है। ठीक उसी तरह जिस समाज में नारी अशक्त रही तो समाज भी हर दृष्टि से कमजोर ही बना रहेगा। नारी परिवार और समाज की धुरी है। घर की गृहणी ही वह साँचा है, जिसके विचार और संस्कारों के अनुरूप ही घर, परिवार और समाज का वातावरण ढलता है।

नारी सशक्तीकरण समय की माँग है। नारी सशक्तीकरण का तात्पर्य उसे अपनी गरिमा का वास्तविक बोध कराना, उसका आत्मविश्वास बढ़ाना। यह कार्य उसे सदियों से चली आ रही दबी-कुचली मानसिकता से उसे उबारकर ही संभव हो सकता है। घर की चारदीवारी से उसे निकलना होगा। शिक्षा, स्वावलम्बन के बढ़ते स्तर के साथ जैसे-जैसे महिलाओं की सामाजिक कार्यों में भागीदारी बढ़ती जाएगी, वैसे-वैसे उनका आत्मविश्वास भी बढ़ता है। समय बदल रहा है। देश आगे बढ़ रहा है। विकास की यह यात्रा नारी सशक्तीकरण के बिना पूरी नहीं हो सकती।

विशिष्ट गुणों से है पहचान

नारी सशक्तीकरण का अर्थ स्त्रियों द्वारा पुरुषों की बराबरी करना नहीं है। पुरुष और नारी दोनों अपने सहज, स्वाभाविक रूप में समाज के विकास में कंधे से कंधा मिलाकर चलें, तभी समाज की सच्ची प्रगति संभव है। तभी समाज में संतुलन स्थापित हो सकेगा, समाज का स्वस्थ विकास होगा।

नारी मात्र शारीरिक आकृति नहीं, एक विशिष्ट प्रकृति है, विशिष्ट गुणों का समुच्चय है। परमात्मा ने सृजन की सामर्थ्य नारी को प्रदान की है। जब ब्रह्म में 'एकोऽहं बहुस्याम्' की स्फुरणा हुई तब मातृरूप माया के संयोग से सृष्टि का सृजन हुआ। हमारी सनातन संस्कृति में सृजनात्मक शक्तियों की वंदना मातृरूप में ही की गई है। नवसृजन की इस वेला में भी नारी का ही प्रमुख योगदान होगा।

नारी में धरती माँ की तरह धारण करने की सामर्थ्य है। वह प्रकृति की भाँति मानव मन में सरसता, सुंदरता का संचार करती है। प्रेम और ममता के साथ स्नेह-संवेदनाओं की पोषक है नारी। बेसुरे जीवन को स्वर-संगीत से सजा देने की विशेषता का नाम है नारी। सद्भाव और संस्कारों के पोषण से स्वर्ग की सृष्टि करने वाली है नारी। आवश्यकता पड़ी तो दुर्गा और काली के रूप में असुरता का दमन करने के लिए मोर्चा सँभालने वाली है नारी। नारी सृजन, सद्भाव, संवेदना, शील, सेवाभावना, पवित्रता, प्रेम, दया, करुणा, सहृदयता, ममता जैसे दिव्य गुणों का समुच्चय है। नारी सशक्तीकरण का अर्थ है अपने इन दिव्य गुणों को पहचानना और उनका पोषण करना। कहा गया है-"यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता।" जहाँ इन दिव्य गुणों से सम्पन्न देवियों का सम्मान होता हो, सचमुच वहाँ देवताओं का ही निवास होगा।

स्वार्थ-संकीर्णता और भौतिकतावादी सोच से ओतप्रोत वर्तमान युग में व्याप्त अराजकता, आतंक, भय, भ्रष्टाचार जैसी अवांछनीयताओं से मानवता को मुक्ति दिलाने के लिए देवतुल्य आत्माओं की आवश्यकता है। प्रगतिशील विचारों से युक्त सहज स्वाभाविक गुण सम्पन्न देवियाँ ही वह साँचा हैं, जिनमें महामानव ढलते हैं। जिन घरों में ऐसी देवियों का वास होता है, वहीं देवता पलते हैं।

दृष्टिकोण बदलना होगा

तुम अबला कहाँ हो?

सहस्र वर्षों की गुलामी के दिनों में नारी के सम्मान और अधिकारों की रक्षा के लिए अथवा पुरुष प्रधान समाज के अहंकारवश नारी में अबला होने की धारणा पुष्ट कर दी गई हो, लेकिन नारी तुम अबला कहाँ हो? नारी को परमात्मा ने जो शक्तियाँ प्रदान की हैं, वह पुरुषों से भी कहीं अधिक हैं। वर्तमान युग में बढ़ती नारी-सामर्थ्य से स्वतः सिद्ध हो जाता है। नारी पुरुषों से कहीं अधिक श्रमशील है। वह चौके-चूल्हे की जिम्मेदारियाँ निभाते हुए, बच्चों का पालन-पोषण करते हुए भी पुलिस, सेना और तमाम ऐसी सेवाओं में बेहतरीन भूमिका निभा रही है। आज समाज में नैतिकता का पतन, भ्रष्टाचार, आतंक का निरंकुश रूप दिखाई देता है। ऐसे में नारी शक्ति समाज के उत्थान में अधिक नैतिक, हितकारी और विश्वसनीय दिखाई देती है, जिसकी समाज को नितांत आवश्यकता है।

तुम विद्वत्ता में अपाला, घोषा, मैत्रेयी, अरुंधती हो, पवित्रता में सीता-सावित्री हो, शौर्य में रानी लक्ष्मीबाई, रानी चेनम्मा हो, भक्ति में मीराबाई, मातृत्व में मदालसा और शकुंतला हो। देश में बोर्ड की परीक्षाओं के परिणाम आते हैं तो हर बार बेटियाँ बाजी मारती दिखाई देती हैं। खेलों में मेडल की तालिकाओं में मातृशक्ति का योगदान कम नहीं होता। तुम ऐसी ही प्रतिभाशाली विभूति हो। अपना दृष्टिकोण बदलो, आत्मविश्वास जगाओ और आकाश की ऊँचाइयों को चूमने का साहस दिखाओ।

देवियों को मिले समुचित सम्मान

आमतौर पर घर, परिवार में सुख, शान्ति, प्रगति, सिद्धि, समृद्धि के लिए अनेक देवी-देवताओं की पूजा, उपासना, अनुष्ठान किए जाते हैं। आवश्यकता घर में माँ, बहिन, धर्मपत्नी और बेटियों के रूप में विद्यमान साक्षात देवियों को यथोचित सम्मान देने की है। देव प्रतिमाएँ कोई सिद्धि प्रदान करें या न करें, घर की इन देवियाँ को समुचित प्यार, सम्मान, प्रोत्साहन, सुविचार, संस्कार और अवसर मिले तो ये निश्चित ही सबका जीवन बेहतर बनाती दिखाई देंगी।

बेड़ियों से मुक्त होना होगा

आज के पुरुष प्रधान समाज में नारी अनेक बेड़ियों से जकड़ी हुई दिखाई देती है। महात्मा विनोबा ने महिलाओं द्वारा पहने जाने वाले सोने-चाँदी के आभूषणों को हथकड़ी और बेड़ियाँ कहा है, जो उनकी सुरक्षा के लिए खतरा तो पैदा करते ही हैं, उनकी मानसिकता को भी एक दायरे में सीमित कर देते हैं। उनका मानना था कि नारियों को ऐसे किसी बंधन में नहीं बँधना चाहिए, जो उन्हें यह अहसास कराये कि उनकी सामर्थ्य पुरुषों से कम है।

महिलाओं को सदियों से चली आ रही पर्दा प्रथा, बेटे-बेटियों में भेद जैसी उन सभी लोक परंपराओं से मुक्ति पानी चाहिए, जो उन्हें पुरुषों से कमजोर होने का अहसास कराती हैं। परम पूज्य गुरुदेव ने कहा है-परंपराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देंगे। नारी को विवेकपूर्वक निरर्थक परम्पराओं को ढोने की बजाय प्रगतिशील परम्पराओं को अपनाने की ओर साहसी कदम बढ़ाने होंगे। पुरुषों को भी उन्हें इसके लिए प्रोत्साहन देना होगा, पूरा-पूरा सहयोग देना होगा।

आधुनिकता की अनगढ़ होड़ छोड़ें

नारी की गरिमा उनके सहज, स्वाभाविक गुणों के साथ ही है। नारी सशक्तीकरण का अर्थ है उन दिव्य गुणों का विकास, जिनसे मानव में देवत्व का अवतरण और धरती पर स्वर्ग का सृजन संभव है। नारी उत्कर्ष के नाम पर पुरुषों से रहन-सहन, वेशभूषा, खान-पान की दृष्टि से होड़ करने की बजाय सृजन चेतना, नारी संवेदना, ममत्व, सहृदयता के विकास की साधना करनी चाहिए।

व्यसन-फैशन से बचाओ, सृजन में लगाओ

आजकल फैशन भी बहुत बड़ा व्यसन बनता जा रहा है। परम पूज्य गुरुदेव दहेज और खर्चीली शादियों को 'सत्यानाशी उन्माद' कहा करते थे। आजकल इनमें फैशन और आधुनिक समाज में बढ़ती जा रही 'इवेंट' की परंम्परा भी जुड़ती जा रही है। परम पूज्य गुरुदेव का मानना था कि इस प्रकार के निरर्थक खर्च हमें दरिद्र और बेईमान बनाते हैं। इसलिए समाज में 'व्यसन से बचाओ, सृजन में लगाओ' के सूत्र को चरितार्थ करने के लिए जनजागरण की आवश्यकता है।

नारी विज्ञापन की वस्तु नहीं है

शास्त्रों ने मातृशक्ति की वंदना की है, लेकिन आधुनिक उपभोक्तावादी सोच ने उसे बाजार में विज्ञापन की वस्तु बना दिया है। चौक-चौराहों पर लगे और पत्र-पत्रिकाओं में छपे उसके अश्लील चित्र समाज को पतन की ओर ले जा रहे हैं। इस प्रवृत्ति ने पूरे समाज को अनगढ़ होड़ में खड़ा कर दिया है, असुरक्षा का वातावरण बनाया है। इस अधोगामी प्रवृत्ति पर अंकुश लगाना ही होगा।

नारी ही नारी की दुश्मन क्यों?

खाली दिमाग शैतान का घर कहा जाता है। यही कारण है कि सदियों से घर की चारदीवारी में बंद महिलाओं के पास पुरुष वर्ग की चाटुकारिता और परस्पर द्वेष, दुर्भाव की, दूसरों पर रोब जमाने की प्रवृत्ति पैदा चली होती गई। नारी ही नारी की सबसे बड़ी दुश्मन बनती गई। सभ्य समाज में यह उचित नहीं है। इस मानसिकता को बदलना ही होगा।

नारी को बढ़ाओ, मातृत्व को जगाओ

परमात्मा ने शारीरिक आवश्यकताओं के अनुरूप पुरुष और नारी में कुछ भिन्नताएँ रखी हैं, लेकिन गुणों के रूप में हर पुरुष में नारी और हर नारी में पुरुष भी विद्यमान है। परम पूज्य गुरुदेव की काया पुरुष की है, लेकिन उनके हृदय में मातृत्व का भाव ही समाया हुआ था। नारी सुलभ गुणों के अभाव में कोई संत और महापुरुष बन ही नहीं सकता।

यह भारत का अमृत काल है। समृद्धि की दृष्टि से तो भारत श्रम और बुद्धि की शक्ति से शिखर पर पहुँच जाएगा, लेकिन विश्व गुरु के रूप में भारत की प्रतिष्ठा आध्यात्मिक शक्तियों के आधार पर ही बढ़ेगी। देवियाँ अपने सहज स्वाभाविक गुणों के आधार पर इस कार्य में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएँगी। जिस अनुपात में महिलाओं को समाज में प्रोत्साहन, सम्मान और अवसर मिलेगा, उसी अनुपात में स्वर्ग धरा पर अवतरित होता चला जाएगा। पुरुषों को भी अपनी मानसिकता बदलकर अपने व्यक्तित्व में स्नेह, संवेदना, प्रेमभाव को बढ़ाना होगा। तभी सही मायनों में नारी सशक्तीकरण का उद्देश्य पूरा होगा।

मध्य प्रदेश में मातृशक्ति जन्मशताब्दी श्रद्धा संवर्धन शक्ति कलश यात्राओं का गाँव-गाँव में भव्य स्वागत

हर जिले में हर तहसील के हर गाँव में दे रही हैं गायत्री उपासना, युग साधना, नशामुक्ति, युवा उत्कर्ष, नारी जागरण सहित राष्ट्र जागरण का प्रभावशाली संदेश

प्रस्तुत हैं जनवरी माह में सम्पन्न कुछ यात्राओं के प्राप्त उत्साहवर्धक समाचार

बरघाट, सिवनी। मध्य प्रदेश

युग निर्माण आन्दोलन के इतिहास में वर्ष 2026 बहुत विशेष है। यह परम पूज्य गुरुदेव द्वारा अखण्ड ज्योति के प्रज्वलन तथा परम वंदनीया माताजी के जन्म के साथ प्रज्ञायुग के शुभारंभ का शताब्दी वर्ष है। अखिल विश्व गायत्री परिवार में इस वर्ष को लेकर विशेष उत्साह है, विशेष लक्ष्य है और उसे प्राप्त करने के लिए विशेष सक्रियता अपनाई जा रही है।

मध्य प्रदेश ने हर पंचायत, हर गाँव, हर घर तक युगऋषि का संदेश पहुँचा देने का लक्ष्य रखा है। इन दिनों पूरे प्रदेश में मातृशक्ति श्रद्धा संवर्धन शक्ति कलश यात्राएँ निकाली जा रही हैं। 130 रथों के माध्यम से हर पंचायत स्तर तक कार्यक्रमों का आयोजन हो रहा है।

बरघाट तहसील में गाँव-गाँव शक्ति कलश के स्वागत की दिव्य झाँकी

तहसील बरघाट में गाँव-गाँव शक्तिकलश यात्रा का भव्य स्वागत हो रहा है। हर गाँव में सैकड़ों की संख्या में लोग शक्ति कलश का पूजन कर रहे हैं और नवयुग के निर्माण में भागीदारी करते हुए साधनात्मक योगदान और साधनों के सहयोग से भागीदारी करने का संकल्प ले रहे हैं। बरघाट तहसील में रथ यात्रा का संचालन श्री सुखराम उइके, श्री चैन सिंह टेमरे, श्री दामूप्रसाद बोपचे, श्री भगवती बिसेन आदि की टोली कर रही है।

57 पंचायतों में पहुँची यात्रा : गाँव-गाँव विशेष साधना के संकल्प ले रहे हैं ग्रामवासी

हटा, दमोह। मध्य प्रदेश

हटा जिले में 23 जनवरी से 30 जनवरी तक 57 ग्राम पंचायतों में मातृशक्ति श्रद्धा संवर्धन शक्ति कलश यात्रा पहुँची। टोली नायक एवं तहसील समन्वयक पंडित दिनेश दुबे ने बताया कि सभी गाँवों में शक्ति कलश के पहुँचने पर महिलाओं ने सिर पर कलश रखकर आरती उतारी एवं पुष्प वर्षा कर वंदन किया।

इस यात्रा में गाँव-गाँव गायत्री महामंत्र लेखन पुस्तिकाएँ, गायत्री चालीसा एवं युग साहित्य वितरित किया जा रहा है। श्रद्धालुओं में सामाजिक उत्थान के लिए साधना, स्वाध्याय, संयम, सेवा के संकल्प जगाए जा रहे हैं। प्रत्येक पंचायत से पाँच या उससे अधिक परिजनों को बसंत पंचमी 2024 से 2026 तक विशेष गायत्री महामंत्र जप अनुष्ठान करने के संकल्प कराए जा रहे हैं।

गाँवों में चल रहा है घर-घर यज्ञ अभियान, सारोल के 40 घरों में यज्ञ हुआ

देवास। मध्य प्रदेश

परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी (वर्ष-2026) के परिप्रेक्ष्य में मध्य प्रदेश के हर जिले एवं हर तहसील में प्रत्येक ग्राम पंचायत स्तर पर मातृशक्ति श्रद्धा संवर्धन शक्ति कलश यात्राएँ आयोजित की जा रही हैं। श्री विक्रम सिंह चौधरी के अनुसार देवास तहसील में यात्रा का शुभारंभ ग्राम सारोल से हुआ। इस अवसर पर देवास एवं इंदौर जिले के अनेक प्रमुख परिजन उपस्थित रहे। इस अवसर पर ग्राम के 40 घरों में एक साथ गायत्री यज्ञ का आयोजन भी किया गया।

सारोल की ग्राम सभा में दिया युग संदेश

युवा जिला समन्वयक श्री प्रमोद निहाले और श्री संतोष पटेल ने यात्रा के उद्देश्यों की जानकारी गाँववासियों को दी। सर्वाधिक जोर व्यसन मुक्त समाज, कुरीति उन्मूलन और संस्कार संवर्धन पर दिया गया। उन्होंने गाँववासियों से तीन वर्षों में गायत्री परिवार के सप्त आन्दोलनों को गति देते हुए आदर्श ग्राम निर्माण में सहयोग करने का आह्वान किया।

सैकड़ों ग्रामवासी बहिन-भाई इस यात्रा में शामिल हुए। लोगों को युगऋषि का साहित्य भेंट किया गया। पूरे गाँव में नवउल्लास जगाने के बाद यह यात्रा अगले पड़ाव-ग्राम सन्नोड़ पहुँची।

अवसर

विशिष्ट गणमान्यों तक पहुँचा युग संदेश

पंचकूला। हरियाणा

दिनांक 6 फरवरी 2024 को सैक्टर 20 पंचकूला में गायत्री यज्ञ के माध्यम से श्रमशक्ति भवन के लिए भूमि पूजन सम्पन्न हुआ। इस समारोह में श्रम विभाग हरियाणा के सम्मानित मंत्री श्री अनूप धानक, श्री ज्ञानचंद गुप्ता माननीय विधानसभा अध्यक्ष, श्री राजीव रंजन आईएएस-प्रधान सचिव श्रम विभाग, श्री मनी राम शर्मा आईएएस-श्रम आयुक्त व अन्य अनेक वरिष्ठ-कनिष्ठ शासकीय अधिकारी, कर्मचारियों ने भाग लिया।

स्थानीय वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री चंद्रमोहन शर्मा ने बताया कि भूमिपूजन के कर्मकाण्ड के माध्यम से उन्हें परम पूज्य गुरुदेव के क्रान्तिकारी विचार तथा जीवन-आदर्शों से अवगत कराकर उन्हें सामाजिक उत्थान की योजनाओं में सहभागिता के लिए प्रेरित करने में उल्लेखनीय सफलता मिली। गणमान्य अतिथियों को युगऋषि का वाङ्मय भेंट किया गया। उन्होंने साहित्य स्टॉल का अवलोकन करते हुए अपनी रुचि का साहित्य भी खरीदा। पंचकूला के कार्यकर्त्ता सर्वश्री लक्ष्मीचंद कपिल, राजकुमार शर्मा, रामरूप शर्मा, रणधीर कुमार ने आयोजन की सफलता में अहम भूमिका निभाई।

यज्ञ में भाग ले रहे माननीय मंत्री, विधान सभा अध्यक्ष, प्रधान सचिव श्रम विभाग आदि गणमान्य

24 कुण्डीय यज्ञ के साथ रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का उत्सव मनाया

1 फरवरी को जिला गायत्री परिवार ट्रस्ट पंचकूला की रेख देख में गाँव रिहौर, दरिया रेलवे स्टेशन चंडीगढ़, मनीमाजरा ठाकुरद्वारा मंदिर, सारंगपुर चंडीगढ़ में पाँच स्थानों पर 24-24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ हुए। इनके माध्यम से हर क्षेत्र में अयोध्या में राम लला की प्राण प्रतिष्ठा का उत्सव मनाया गया।

नवयुग की सृजन चेतना का विस्तार

युवा प्रकोष्ठ का साप्ताहिक गंगा सफाई अभियान

11 फरवरी को गंगा के घाटों की सफाई करते गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ पटना के सदस्य

पटना। बिहार

प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ, पटना के द्वारा 4 फरवरी से गंगा घाटों की सफाई के लिए एक विशेष अभियान चलाया गया है। उस दिन नगर के गाँधी घाट पर स्वच्छता और जनजागरूकता का कार्यक्रम रखा गया। युवा प्रकोष्ठ के परिजनों ने घाटों की सफाई तो की ही, गंगा घाट तथा अपने आसपास के क्षेत्र में स्वच्छता बनाए रखने के लिए लोगों को जागरूक भी किया। अभियान में जुटे परिजनों ने लगभग 250 युवा भाई एवं 90 माता व बहिनों को 11 फरवरी के स्वच्छता अभियान में भागीदारी का आमंत्रण दिया। लगभग यही क्रम 11 फरवरी को भी दोहराया गया।

228वाँ वृक्षारोपण सप्ताह

प्रान्तीय युवा प्रकोष्ठ बिहार की पटना शाखा द्वारा 4 फरवरी को मौलाना मजहरूल हक अरबी व फारसी विश्वविद्यालय, पटना (मीठापुर) के कैम्पस में बड़े उत्साह एवं जुनून के साथ वृक्षारोपण किया गया। शाखा द्वारा चलाए जा रहे सतत साप्ताहिक वृक्षारोपण अभियान का यह 228वाँ कार्यक्रम था। इसमें शाखा द्वारा संचालित बाल संस्कारशाला, कंकड़बाग के ओजस्वी एवं तेजस्वी भाईयों ने भाग लिया। उन्होंने पहले से लगाये गये पौधों की निराई एवं सिंचाई भी की।

250 मरीजों का परीक्षण, 37 का ऑपरेशन हुआ

नेत्र शिविर

शुक्लागंज, उन्नाव। उ.प्र.

गायत्री शक्तिपीठ बालूघाट, शुक्लागंज अपने पीड़ा निवारण अभियान के अंतर्गत विगत कई वर्षों से गायत्री नेत्र परीक्षण एवं ऑपरेशन शिविरों का आयोजन करता रहा है। इस वर्ष 26 जनवरी 2024 को यह शिविर आयोजित हुआ। इसमें लगभग 250 मरीजों का निःशुल्क परीक्षण किया गया। मोतियाबिंद के ऑपरेशन के लिए उपयुक्त पाये गए 37 मरीजों का डॉ. पृथ्वीराज सिंह एवं डॉ. पारूल सिंह डी.ओ.एम.एस. ने निःशुल्क ऑपरेशन किया।

गौसंरक्षण को प्रोत्साहित कर रहे हैं प्रबुद्ध युवा

9 कुण्डीय यज्ञ का कई भाषाओं संचालन

बैंगलुरू। कर्नाटक

के.आर. पुरम बैंगलुरु में 9 कुंडीय गायत्री यज्ञ का आयोजन हुआ। इस यज्ञ के संचालन से लेकर प्रचार, प्रबंधन आदि समस्त कार्य गायत्री परिवार की नारी शक्ति ने संपन्न कराए। बहिनों की प्रेरणा और प्रयास से दीक्षा, जन्म दिवस, विवाह दिवस संस्कार भी संपन्न कराए गए। इसमें अंबिका-अनिल गौड़ा जी का विशेष योगदान रहा।

इस कार्यक्रम में 300 से अधिक श्रद्धालुओं ने भाग लिया। अलग-अलग भाषाओं के लोगों की उपस्थिति रही, जिसके कारण यज्ञ पुरोहित श्रीमती रमामणि और चंदना जी ने कन्नड़, तेलगु, अंग्रेजी एवं हिंदी में कर्मकाण्ड कराया और श्री गुरुराज राव व वेंकटेशु जी ने गुरुवर का संदेश दिया। कार्यक्रम में गौसंरक्षण और गौपालन पर विशेष बल दिया गया। यज्ञ स्थल पर सत्साहित्य प्रदर्शनी भी लगाई गई थी।

शान्तिकुञ्ज के समर्पित कार्यकर्त्ता को मिला गुरु गोरक्षनाथ सम्मान

राजिम। छत्तीसगढ़

गुरु गोरक्षनाथ जयन्ती, मकर संक्रान्ति के पावन अवसर पर प्रान्तीय समाज गौरव विकास समिति रायपुर के तत्त्वावधान में साहू समाज छात्रावास राजिम में एकादशम छत्तीसगढ़ स्तरीय प्रतिभा सम्मान समारोह सम्पन्न हुआ। इस समारोह में शान्तिकुञ्ज के जीवनदानी कार्यकर्त्ता और छत्तीसगढ़ी भाषा में राज्य स्तरीय प्रतिष्ठा प्राप्त लेखक श्री पुनीत राम गुरुवंश, मूल निवासी ग्राम सिरसिदा, पो. खम्हरिया, जिला धमतरी को 'गुरु गोरक्षनाथ सम्मान' से अलंकृत किया गया। उन्हें यह सम्मान मुख्य अतिथि महामंडलेश्वर आचार्य गोवर्धनशरण व्यास सिरकट्टी आश्रम जिला गरियाबंद और अध्यक्षता कर रहे श्री भुवनेश्वर साहू, उपाध्यक्ष छत्तीसगढ़ साहू संघ ने प्रदान किया। इस समारोह में अन्य 42 विशिष्ट महानुभावों को 'सामाजिक समरसता सम्मान' दिया गया। इस समारोह में राज्य की अनेक विशिष्ट विभूतियाँ उपस्थित थीं।

महामंडलेश्वर आचार्य गोवर्धनशरण व्यास से सम्मान ग्रहण करते श्री पुनीत राम गुरुवंश

अब आप 01334-311001 पर फोन कर शान्तिकुञ्ज की नई स्वचालित फोन व्यवस्था (आईवीआर) से शान्तिकुञ्ज के विभिन्न विभागों से सीधा सम्पर्क कर सकते हैं।

युवा पीढ़ी को प्रगतिशील प्रेरणाएँ देकर कर रहे हैं दिव्य भारत का निर्माण

समय के उपयोग पर निर्भर होती है सफलता या असफलता -खान सर

पटना। बिहार

इस दुनिया में सफलता और असफलता के बीच का अंतर 'समय' का सदुपयोग या दुरुपयोग है। जिस व्यक्ति ने अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिए समय दिया हो और स्वयं को तपाया हो, वही आगे चलकर इतिहास के पन्नों में दर्ज हो पाया है।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था, ''उठो! जागो, रुको मत, जब तक कि अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर लो।'' दुनिया में प्रत्येक व्यक्ति सफल होना चाहता है, किन्तु वह अपने लक्ष्य पर समय नहीं देना चाहता। आज का युवक शॉर्टकट

विशाल युवा सम्मेलन

में ही सबकुछ हासिल करना चाहता है।

शिक्षा जगत के चर्चित व्यक्तित्व खान सर, डायरेक्टर खान ग्लोबल स्टडी ने उपरोक्त मनोभाव राष्ट्रीय युवा दिवस पर गायत्री परिवार के युवा प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित विशाल युवा सम्मेलन को संबोधित करते हुए व्यक्त किए थे। उन्होंने कहा कि जीवन में सफलता के लिए जिस ऊर्जा की आवश्यकता होती है वह भारतीय अध्यात्म और संस्कृति के माध्यम से प्राप्त होती है।

गायत्री परिवार से जुड़े युवाओं को सम्बोधित करते खान सर और उनका सम्मान करते मनीष कुमार

समारोह के मुख्य अतिथि खान सर ने गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ की निष्ठा और तन्मयता की सराहना विगत 29 वर्षों से बच्चों और युवाओं का सही मार्गदर्शन कर उन्हें महानता की ओर अग्रसर करने के लिए की। उन्होंने इस कार्य को समाज में एक नयी क्रान्ति की शुरुआत बताया।

सम्मेलन को प्रान्तीय युवा प्रकोष्ठ के संचालक श्री मनीष कुमार ने भी संबोधित किया। उन्होंने कहा कि अपने समय में स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि उन्हें 100 युवा मिल जायें तो वे देश और दुनिया की दिशा व दशा बदल सकते हैं। युवा प्रकोष्ठ ऐसे ही प्राणवान राष्ट्र निर्माताओं को तलाशने और तराशने का कार्य कर रहा है।

यह कार्यक्रम बहुत ही सफल और प्रेरणादायी था। 3850 युवकों और 1826 युवतियों ने इसमें भाग लिया। इसकी सफलता में सर्वश्री ज्ञान प्रकाश, निशान्त रंजन, प्रिंस रंजन, राजीव जी, अभिषेक जी, सच्चिदानन्द जी, बिट्टू जी, अजीत रंजन आदि की मुख्य भूमिका रही।

'दिया' छत्तीसगढ़ को मिला विशिष्ट सेवा सम्मान

भिलाई, दुर्ग। छत्तीसगढ़

सोवियत संघ व भारत के मध्य भिलाई इस्पात संयंत्र हेतु हुए समझौते की स्मृति में दिनांक 2 फरवरी की सायं शपथ फाउंडेशन भिलाई द्वारा कला मंदिर सिविक सेंटर भिलाई में 'थैंक यू भिलाई' कार्यक्रम आयोजित किया गया था, जिसमें गायत्री परिवार के युवा संगठन 'दिया' छत्तीसगढ़ को विशिष्ट सेवा सम्मान 2024 से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री राम गोपाल गर्ग (पुलिस अधीक्षक, दुर्ग) एवं श्री अभिषेक झा (अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, दुर्ग) थे।

फाउण्डेशन के गणमान्यों से सम्मान ग्रहण करते 'दिया' के सदस्य

शपथ फाउंडेशन के वीरेंद्र सथपती, अशोक गुप्ता एवं जितेन्द्र हसवानी ने बताया कि हर वर्ष शिक्षा, कला, पर्यावरण, उद्योग, कला, खेल एवं जनजागरण के क्षेत्र में विशिष्ट कार्य करने वाले लोगों को 'नवरत्न सम्मान' से सम्मानित किया जाता है। इसी क्रम में 'दिया' को युवा जागृति अभियान के क्षेत्र में निभाई जा रही महत्त्वपूर्ण भूमिका के लिए यह सम्मान दिया गया है। इस अवसर पर सम्मान को ग्रहण करने के लिए गायत्री परिवार के संरक्षक सदस्य श्री एस.पी. सिंह, दिया छत्तीसगढ़ के प्रांतीय संयोजक डॉ. पी.एल. साव एवं डॉ. योगेंद्र कुमार, इं. युगल किशोर, सौरभ कांत, इंजीनियर रोहन पाण्डेय एवं श्रीमती अनीता साव उपस्थित थे।

बाल संस्कारशाला का वार्षिकोत्सव एवं युवा जागृति समारोह

जीवन की संभावनाओं को साकर करने की उम्र है बचपन -श्री आशीष सिंह

जमुई। बिहार

झाझा प्रखंड के अंतर्गत पंचायत बैजला के हाईस्कूल में गायत्री परिवार द्वारा निःशुल्क बाल संस्कार शाला चलाई जाती है। 28 जनवरी को हाईस्कूल के मैदान में युवा जागृति समारोह के रूप में बाल संस्कार शाला का वार्षिकोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर संस्कार शाला के बच्चों ने विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से अपने गुण और प्रतिभा का परिचय देते हुए वहाँ उपस्थित सैकड़ों लोगों को बहुत प्रभावित किया।

बाल संस्कार शाला के बच्चों की योग प्रस्तुति और संदेश देते शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री आशीष सिंह

समारोह के मुख्य वक्ता शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री आशीष सिंह थे। उन्होंने कहा कि गायत्री परिवार की संस्कार शाला बच्चों को उत्कृष्टता के साँचे में ढालने का प्रयास है। यह उम्र ऐसी है जिसमें बच्चों और अभिभावकों को उन्हें एक महापुरुष के रूप में गढ़ने के लिए कड़ी मेहनत और भरपूर प्रयास करने चाहिए।

कार्यक्रम में पार्षद श्री धर्मदेव यादव ने गायत्री परिवार के प्रयासों को बच्चों को उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जाने वाला बताया। महात्मा गाँधी स्मारक उ. विद्यालय प्रभारी श्री राजाराम नागमणि ने नशामुक्ति और दहेज प्रथा से समाज को मुक्त कराने का आह्वान किया।

ब्यूटीशियन प्रशिक्षण शिविर में गायत्री परिवार ने दी नारी सशक्तीकरण की प्रेरणाएँ

जयपुर। राजस्थान

महिंद्रा वर्ल्ड सिटी के सहयोग से तहसील सांगानेर के गाँव भममोरिया में 'ब्यूटीशियन प्रशिक्षण शिविर' का आयोजन किया गया। गायत्री परिवार की ममता त्रिपाठी ने बहिनों को शारीरिक सौन्दर्य वृद्धि के साथ आंतरिक सौंदर्य बढ़ाने पर भी विशेष ध्यान देने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि नारी सशक्तीकरण का अर्थ पुरुषों की सामर्थ्य से प्रतिस्पर्धा नहीं है,

प्रशिक्षणार्थियों को दी गईं गायत्री मंत्रलेखन पुस्तिकाएँ

बल्कि नारी के ईश्वर प्रदत्त मौलिक गुण-दया, ममता, प्रेम, स्नेह, संवेदना, करुणा, समन्वय, सहयोग, उदारता के विकास के साथ स्वावलम्बी बनना और समाज को पोषण देने में अधिक से अधिक समर्थ होना है।

गायत्री परिवार ने बहिनों को गायत्री मंत्र लेखन की पुस्तिकाएँ प्रदान करते हुए गायत्री उपासना के लिए प्रेरित किया।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में व्याख्यानमाला 'वसुधैव कुटुम्बकम'

ऋषिओं ने हमें जीवन जीने की सही राह दिखाई।
- नितिन गडकरी

परिवार दीर्घ और सुखमय जीवन का आधार है।
- डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

भारत सरकार में सड़क परिवहन मंत्री माननीय नितिन गडकरी और उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री माननीय श्री पुष्कर सिंह धामी दिनांक 13 फरवरी 2024 को शान्तिकुञ्ज पधारे। वे देव संस्कृति विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित व्याख्यान माला 'वसुधैव कुटुंबकम' में मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित थे। इस अवसर पर हरिद्वार विधायक माननीय श्री मदन कौशिक और माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, प्रतिकुलपति देसंविवि, कुलसचिव श्री बलदाऊ देवांगन मंच पर उपस्थित थे।

माननीय श्री नितिन गडकरी जी ने भारतीय ऋषियों द्वारा अपनाई गई वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को समस्त मानव जाति के लिए कल्याणकारी बताया। उन्होंने कहा कि आज विश्व को इस सूत्र को अपनाने की सबसे ज्यादा आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि ऋषिओं ने हमें जीवन जीने की सही राह दिखाई है। जीवन छोटा है और कार्य बड़े हैं। हमें समय के साथ बदलना चाहिए। स्वार्थ और शंका से उबरकर, मित्र और परिवार के भाव से जी कर देखें, जीवन आनन्द से भर जाएगा।

व्याख्यान का शुभारंभ माननीय गणमान्यों द्वारा दीप प्रज्वलन, देव पूजन के साथ हुआ। अतिथि स्वागत के क्रम में विषय की प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि जीवन में माधुर्य का संचार और सौंदर्य का निखार परिवार से ही आता है। अतः परिवार दीर्घ और सुखमय जीवन का आधार है।

सड़क परिवहन मंत्री माननीय श्री नितिन गडकरी जी ने देसंविवि परिसर में मौलश्री का पौधा रोपा और विश्वविद्यालय स्थित शौर्य की दीवार के समक्ष उत्तराखण्ड के वीर शहीदों को पुष्पांजलि अर्पित की। मंच संचालन श्री केदार प्रसाद दुबे ने किया।

श्रद्धेय द्वय से भेंटवार्ता

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के पश्चात् माननीय मंत्री जी ने शान्तिकुञ्ज पधार कर श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी से भेंट की। श्रद्धेय द्वय ने उन्हें सम्मानित करने के साथ मुम्बई में आयोजित हो रहे अश्वमेध महायज्ञ में आमंत्रित किया। शान्तिकुञ्ज आगमन पर व्यवस्थापक आदरणीय श्री महेंद्र शर्मा जी सहित वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने उनका स्वागत किया।

सभा के आरंभ में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलगीत का गायन मध्य में श्री गडकरी जी, उनके दायें श्री धामी जी व बायें डॉ. चिन्मय जी

श्रद्धेय डॉक्टर साहब व श्रद्धेया जीजी से चर्चा करते श्री गडकरी जी

बच्चों को मिली जीनियस बनने की प्रेरणाएँ

विख्यात् बाल मस्तिष्क विकास विशेषज्ञ श्री रमेश जी परतानी से विद्यार्थियों को मिला मार्गदर्शन

राजनांदगाँव। छत्तीसगढ़ : छत्तीसगढ़ माहेश्वरी सभा के तत्त्वावधान में गायत्री विद्यापीठ में राजनांदगाँव जिला माहेश्वरी सभा, माहेश्वरी पंचायत, गायत्री विद्यापीठ द्वारा 28 जनवरी को दो दिवसीय विशेष सेमीनार का आयोजन हुआ। इसके मुख्य वक्ता विख्यात बाल मस्तिष्क विकास विशेषज्ञ, लेखक, राष्ट्रीय कार्य समिति के सदस्य श्री रमेश परतानी जी थे। इस कार्यशाला में पूरे जिले के लोगों को लाभान्वित होने का अवसर मिला।

श्री रमेश परतानी जी अपनी अद्भुत कला कुशलता से न केवल भारत में, अपितु विदेशों में भी बच्चों से सम्बंधित अभिभावकों की समस्याओं का समाधान कर रहे हैं और बच्चों को हर क्षेत्र में निपुण बना रहे हैं।

श्री परतानी जी ने अपने विशिष्ट कौशल के साथ पालकों, शिक्षकों एवं बच्चों का मनोबल बढ़ाते हुए बताया कि सभी बच्चों को हम अपने पुरुषार्थ से निपुण (जीनियस) बना सकते हैं, आवश्यकता प्रत्येक माता-पिता व पालकों को थोड़ा धैर्य और सूझबूझ से काम लेने की है। उन्होंने इस प्रकार हुए कई प्रयोगों का उदाहरण दिया। ऐसे बच्चों की कहानी भी बताई, जिन्होंने छोटी आयु में ही अपनी निपुणता का परिचय देकर गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में अपना नाम दर्ज कराया है। श्रोताओं को प्रश्नोत्तरी का अवसर मिला। सेमीनार का संचालन गायत्री शिक्षण समिति के सचिव श्री गगन लड्ढा द्वारा किया गया।

जब तक हृदय में स्वार्थपरता रहती है, तब तक भगवान से प्रेम नहीं हो सकता। - स्वामी विवेकानन्द

बसंत पंचमी पर्व पर खिले श्रद्धा-समर्पण के विविध रंग

पूरई के विद्यालय में यज्ञ कराती 'दिव्य भारत युवा संघ (दिया)' की टोली

विद्यालय में पंच कुण्डीय यज्ञ, 'दिया' ने जीवन को सँवारने की प्रेरणाएँ दीं

पूरई, दुर्ग। छत्तीसगढ

अखिल विश्व गायत्री परिवार की युवा इकाई 'दिया' छत्तीसगढ़ ने वसंत पंचमी के दिन खेल गाँव पूरई में पंच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न कराया। शाला के प्राचार्य, शिक्षक, विधार्थी सभी ने यज्ञ में भाग लिया। गायत्री परिवार ने सरस्वती पूजन के साथ यज्ञ सम्पन्न कराते हुए सभी को बेहतर जीवन, उत्कर्ष समाज तथा सशक्त राष्ट्र के निर्माण के लिए संकल्प लेने और उन्हें निष्ठापूर्वक निभाने की प्रेरणा दी। बच्चों ने इस आशय के संकल्प भी लिए।

विशिष्ट सहयोगी महानुभावों को सम्मानित किया

तिलोई, अमेठी। उत्तर प्रदेश

तिलोई शाखा ने परम पूज्य गुरुदेव का आध्यात्मिक जन्म दिवस और वसंतोत्सव बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया। इस अवसर पर युग निर्माण आन्दोलन में सक्रिय सहयोग प्रदान करने वाले प्रशासकों को सम्मानित किया गया। गायत्री परिवार ने इस क्रम में उप जिलाधिकारी तिलोई श्री आशीष सिंह, तहसीलदार तिलोई श्री अभिषेक यादव, नायब तहसीलदार सुश्री अमीषा यादव व तिलोई के ब्लॉक प्रमुख श्री कृष्ण कुमार सिंह को उनके कार्यालय पहुँच कर उन्हें सम्मानित किया।

तहसीलदार तिलोई श्री अभिषेक यादव को सम्मानित करते परिजन

समाज में सतत बढ़ती आस्था के दर्शन हुए

मुरादाबाद। उत्तर प्रदेश

गायत्री चेतना केन्द्र की सेवाओं से जनमानस में निरंतर बढ़ती युग निर्माणी आस्था के बीच वसंत पर्व बड़े उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। केन्द्र व्यवस्थापक श्री एल.के. त्यागी के अनुसार यज्ञ में चार पारियाँ हुईं। विगत वसंत पंचमी से लगभग दो गुने लोगों ने कार्यक्रम में भाग लेकर पूज्य गुरुदेव को अपनी संकल्प श्रद्धांजलि अर्पित की।

चेतना केन्द्र में सम्पन्न पंच कुण्डीय यज्ञ

शक्तिपीठ भोपाल में बनाई गई आकर्षक रंगोली

24 कुण्डीय यज्ञ

200 विद्यारंभ संस्कार हुए

भोपाल। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ भोपाल में 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ वसंत पर्व पर श्रद्धा और भक्तिपूर्ण कार्यक्रम सम्पन्न हुए। पर्वोत्सव का शुभारंभ जोन समन्वयक श्री राजेश पटेल द्वारा केसरिया ध्वज फहराने के साथ हुआ। परम पूज्य गुरुदेव के बोध दिवस के उपलक्ष्य में उपस्थित सैकड़ों साधकों को गुरुसत्ता के अनुदानों और युगधर्म से जुड़ी जिम्मेदारियों का बोध कराया गया।

वसंत पंचमी ज्ञान, वाणी, कला और विद्या की देवी माँ सरस्वती का अवतरण दिवस है। इस शुभ अवसर पर माता सरस्वती के विशेष पूजन के साथ लगभग 200 बच्चों के विद्यारंभ संस्कार कराए गए। दीक्षा और मुंडन संस्कार भी हुए।

9 कुण्डीय यज्ञ

आयुर्वेदिक चिकित्सा शिविर

लखीमपुर खीरी। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ लखीमपुर में नौ कुण्डीय यज्ञ के साथ वसंतोत्सव के विशिष्ट कार्यक्रम सम्पन्न हुए। प्रातःकाल सामूहिक जप के साथ कार्यक्रमों का शुभारंभ हुआ। यज्ञ की पाँच पारियाँ सम्पन्न हुईं, विविध संस्कार भी हुए। डॉ. संदीप वर्मा के विशेष सहयोग से शक्तिपीठ पर निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा शिविर का भी अयोजन किया गया था।

वसंत पंचमी के पावन पर्व पर लखीमपुर खीरी के उत्साही युवाओं ने वृक्षारोपण, गरीबों को भोजन जैसी अपनी रचनात्मक गतिविधियों को और गति देने के संकल्प लिए।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा

पुरस्कार वितरण एवं सम्मान समारोह

चित्तौड़गढ़। राजस्थान

दिनांक 28 जनवरी 2024 को गायत्री शक्तिपीठ बरघाट में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का जिला स्तरीय सम्मान समारोह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री प्रमोद कुमार दशोरा ने कहा कि भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के माध्यम से बच्चों में भारतीय संस्कृति के आदर्श जीवन मूल्यों का विकास हो रहा है। उन्होंने इसके लिए गायत्री परिवार का आभार व्यक्त किया। पूर्व जिला आयुर्वेद अधिकारी डॉ. योगेश व्यास ने संस्कृति और समाज के उत्थान के लिए

प्रसिद्ध शिक्षाविद श्री नारायण सिंह राव ने अपनी पत्नी की स्मृति में जिले में प्रत्येक कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं को 500-500 रुपये पुरस्कार स्वरूप प्रदान किए।

गायत्री परिवार द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों की जानकारी दी। भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के जिला संयोजक श्री सत्यनारायण हेडा ने इस वर्ष आयोजित होने जा रही परीक्षा की जानकारी देते हुए सभी से अपना अधिक से अधिक योगदान देने का आग्रह किया।

समारोह के प्रारंभ में गायत्री शक्तिपीठ के प्रबंध ट्रस्टी श्री रमेश चंद्र पुरोहित और सहायक प्रबंध ट्रस्टी श्री बद्री लाल माली ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन श्री जगदीश जोशी ने किया।

दो विद्यार्थी प्रांतीय स्तर पर प्रथम रहे

अलीगढ़। उत्तर प्रदेश

अलीगढ़ जिले में 196 विद्यालयों के 31,327 विद्यार्थियों ने सन् 2023 में आयोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में भाग लिया। परीक्षा के क्षेत्रीय समन्वयक श्री मेघराज सिंह ने बताया कि यह जिले का विशेष सौभाग्य रहा कि जिले के दो विद्यार्थियों ने प्रान्तीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया। गायत्री चेतना केन्द्र, अलीगढ़ में आयोजित शिक्षक एवं उत्कृष्ट छात्र सम्मान समारोह में इन विद्यार्थियों को विशेष रूप से पुरस्कृत किया गया।

यह समारोह जिला संयोजक श्री आर.पी. उपाध्याय की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। नगर के कई विद्यालयों के प्रधानाचार्यों ने समारोह में उपस्थित होकर गायत्री परिवार की इस शिक्षा योजना की सराहना की।

राष्ट्रीय गणतंत्र दिवस पर किया सम्मान

हटा। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ हटा में गणतंत्र दिवस-26 जनवरी के दिन भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा सम्मान समारोह आयोजित हुआ। इसमें वर्ष 2023 में भासंज्ञाप के प्रतिभागियों में कक्षा 6 से 12 तक के 21 छात्र-छात्राओं को नगद राशि एवं उत्कृष्टता प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। विद्यार्थियों के शिक्षकों, अभिभावकों तथा गायत्री परिवार के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं ने भी इसमें उपस्थित होकर गायत्री परिवार के विचार क्रान्ति अभियान की जानकारी प्राप्त की और सराहा। संस्कृति ज्ञान परीक्षा के संयोजक अरुण पटेल, जयप्रकाश नेमा, रमेश श्रीवास्तव समारोह में मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धांजलि

सीताराम लेवे

श्री सीताराम लेवे, शाजापुर। मध्य प्रदेश : अपना पूरा जीवन मिशन की सेवा में समर्पित करने वाले ग्राम खोकरा कलाँ निवासी वरिष्ठ कार्यकर्त्ता, गायत्री प्रज्ञापीठ के संस्थापक 85 वर्षीय श्री सीताराम जी लेवे का दिनांक 4 फरवरी 2024 को देहावसान हो गया। सन् 1968 से मिशन की सेवा में संलग्न स्व. श्री लेवे जी के अनुरोध पर सन् 1980 में स्वयं परम पूज्य गुरुदेव ने खोकरा कलाँ में माँ गायत्री की प्राण प्रतिष्ठा की थी। वे अनेक स्थानीय कर्मठ कार्यकर्त्ताओं के प्रेरणास्रोत थे।

नारायणदास जी

श्री नारायणदास जी, इंदौर। मध्य प्रदेश : आजीवन ब्रह्मचारी रहते हुए अपना सारा जीवन मिशन की सेवा में समर्पित करने वाले गायत्री प्रज्ञापीठ सिरोलिया, जिला देवास के संस्थापक श्री नारायणदास जी 24 जनवरी 2024 को परमात्मचेतना में विलीन हो गए। गायत्री शक्तिपीठ कनाडिया, इंदौर से प्राप्त जानकारी के अनुसार अत्यंत प्रेमभाव रखने वाले श्री नारायणदास जी अपने परिवार से दूर रहकर मिशन के कार्यों में समर्पित रहे।

एस.पी. पचौरी

श्री एस.पी. पचौरी, मथुरा। उत्तर प्रदेश : 25 वर्षों तक गायत्री तपोभूमि, मथुरा को सेवाएँ प्रदान कर रहे वयोवृद्ध श्री एस.पी. पचौरी दिनांक 31 जनवरी 2024 को पावन गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गए। वे एक समर्पित शिष्य के साथ तपस्वी और नैष्ठिक गायत्री उपासक थे। उन्होंने 30 वर्षों तक अन्न त्यागकर नंगे पाँव रहकर गायत्री उपासना और समाज की सेवा की। बहुत वर्षों तक 27 माला जप और यज्ञ उनकी दैनिक दिनचर्या में शामिल रहा।

लक्ष्मी चम्बयाल

श्रीमती लक्ष्मी चम्बयाल, धर्मशाला, कांगड़ा। हिमाचल प्रदेश : युग निर्माण आन्दोलन के लिए पूरी तरह से समर्पित कार्यकर्त्ता श्रीमती लक्ष्मी चम्बयाल, धर्मपत्नी स्व. श्री ज्ञान सिंह चम्बयाल का 90 वर्ष की आयु में दिनांक 30 जनवरी 2024 को देहावसान हो गया। वे सन् 1972 से मिशन की विविध रूपों में सेवा कर रही थीं। पूज्य गुरुदेव की प्रेरणा से उन्होंने घर आए मेहमान को भगवान मानकर आतिथ्य सत्कार करना अपना परम धर्म माना और यही संस्कार अपने बेटे-बेटी, बहू, नाती, पोतों को विरासत में दिए।

402वें पुस्तकालय में युगऋषि के सम्पूर्ण वाङ्मय की स्थापना हुई

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

गायत्री ज्ञान मंदिर, इंदिरा नगर ने श्री शिव चन्द्र पब्लिक इंटर कॉलेज, पंचवटी कॉलोनी, खुर्रम नगर रोड़ लखनऊ के पुस्तकालय में परम पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित वाङ्मय के समस्त 79 खण्डों की स्थापना कराई। यह शाखा द्वारा पुस्तकालयों में वाङ्मय स्थापना अभियान के अंतर्गत 402वीं स्थापना थी। गायत्री परिवार की सक्रिय कार्यकर्त्ता सुश्री रेनू श्रीवास्तव ने अपने पूज्य पिता स्व. बी.डी. श्रीवास्तव एवं पूज्य माता स्व. उर्मिला श्रीवास्तव की स्मृति में यह साहित्य भेंट किया है। इस अवसर पर सभी छात्र-छात्राओं एवं शिक्षक/शिक्षिकाओं को भी अखण्ड ज्योति पत्रिका भेंट की गई।

वाङ्मय स्थापना समारोह में अभियान के मुख्य संयोजक श्री उमानंद शर्मा, श्री वी.के. श्रीवास्तव, डॉ. अभिषेक शुक्ला ने परम पूज्य गुरुदेव के साहित्य की विशेषताओं से शिक्षक-विद्यार्थियों को अवगत कराया। श्री उमानंद शर्मा ने कहा कि ऋषि साहित्य जीवन जीने की कला सिखाता है। संस्थान की प्रधानाचार्य श्रीमती कुसुम शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन व्यक्त किया।

श्री शिव चन्द्र पब्लिक इं. कॉलेज में वाङ्मय स्थापना

विचार क्रान्ति की अद्भुत हूक

युवा युग निर्माणी की सूझबूझ के प्रशंसनीय परिणाम

मुम्बई। महाराष्ट्र

31 जनवरी 2024 को अमृत आईटी पार्क पवई में अपराह्न 3 से 6 बजे तक जेईई मेन्स की परीक्षा चल रही थी। मुंबई के विभिन्न वर्गों और क्षेत्रों से आये विद्यार्थियों के पालक पार्किंग क्षेत्र में प्रतीक्षारत थे। मोबाइल नेटवर्किंग न होने से लोगों का समय काटना मुश्किल हो रहा था।

वहाँ उपस्थित दिया, मुम्बई के हितेश जोशी ने अवसर का लाभ उठाने की ठानी। समीप के जेरोक्स सेण्टर गए और अपने पास उपलब्ध अश्वमेध यज्ञ के ब्रोशर की सैकड़ों फोटो कॉपी करा लीं। उन्हें लेकर वे प्रतीक्षारत प्रत्येक अभिभावक तक पहुँचे, उन्हें अश्वमेध महायज्ञ और गायत्री महायज्ञ के उद्देश्यों की जानकारी दी, यज्ञ में भागीदारी के लिए भावभरा आमंत्रण दिया। उत्साही युवा कार्यकर्त्ता की सूझबूझ और समय के सदुपयोग से विचार क्रान्ति का बहुत बड़ा कार्य सम्पन्न हुआ।

परमात्मा न तो दूर है और न कठिनाई से प्राप्त होता है। वह अपनी देह के भीतर ही है और आत्मानन्द के रूप में प्रत्यक्ष है। - योग वासिष्ठ

ओडिशा और छत्तीसगढ़ राज्य की धराधाम को आलोकित करने पहुँचे युवा युगनायक

भव्य स्वागत युग परिवर्तन के इस विशिष्ट काल में परम पूज्य गुरुदेव के क्रान्तिकारी विचार और युग चेतना का वैश्विक स्तर पर विस्तार कर रहे अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा आदर्श, देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी 2 फरवरी से 5 फरवरी 2024 की तिथियों में ओडिशा तथा छत्तीसगढ़ के प्रवास पर थे। इन चार दिनों में उन्होंने ओडिशा में नवरंगपुर जिले के चंदाहांडी एवं सेमलीगुड़ा तथा छत्तीसगढ़ में सुकमा तथा दंतेवाड़ा में आयोजित विशाल 108 कुण्डीय राष्ट्र जागरण गायत्री महायज्ञों में भाग लिया। यह प्रवास लाखों लोगों की युग निर्माणी आस्थाओं को नई बुलंदी प्रदान करने वाला था।

प्रवास का शुभारंभ 2 फरवरी 2024 को छत्तीसगढ़ में रायपुर एअरपोर्ट से हुआ। वहाँ पहुँचने पर दोनों प्रान्तों के कार्यकर्त्ता भाई-बहिनों एवं शहर के गणमान्य नागरिकों ने उनका भव्य स्वागत किया।

रायपुर के कलेक्टर एवं एयरपोर्ट के डायरेक्टर से भी शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि की भेंट हुई। दोनों महानुभावों को पूज्य गुरुदेव का साहित्य भेंट कर सम्मानित किया।

रायपुर एअरपोर्ट पर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का स्वागत करने पहुँचे छत्तीसगढ़ एवं ओडिशा के प्रमुख कार्यकर्त्ता

रायपुर से चंदाहांडी, जिला नवरंगपुर (ओडिशा) के लिए रवाना हुए। मार्ग में नवापारा, राजिम में कार्यकर्त्ताओं से भेंट एवं स्वागत समारोह आयोजित किए गए थे।

108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ

निर्मल हृदय में ही ईश्वर का प्रकाश उभरता है। - डॉ. चिन्मय जी

नवयुग के श्रीराम के विचारों को घर-घर पहुँचाने का आह्वान, दुर्व्यसनों को उखाड़ फेंकने का संकल्प

सुकमा, बस्तर। छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ के वनवासियों की अपनी विशेषता है। वहाँ के निवासी सहज श्रद्धा एवं विनम्रता, अथाह श्रमशीलता कर्मठता, अकूत सेवाभावना जैसे दिव्यगुणों से ओतप्रोत हैं। इसी दिव्यता के कारण परम पूज्य गुरुदेव छत्तीसगढ़ को अपना हृदयस्थल मानते रहे हैं।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी दिनांक 4 फरवरी को सुकमा में आयोजित 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में भाग ले रहे वनवासियों की इन्हीं दिव्यताओं का पोषण करने पहुँचे। स्थानीय लोगों ने स्थानीय लोकवाद्य और लोकनृत्य के साथ भावभरा स्वागत करते हुए शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों को मंत्रमुग्ध कर दिया। वे सर्वप्रथम गायत्री शक्तिपीठ पहुँचे, माँ भगवती गायत्री की पूजा-वंदना की, तत्पश्चात मंच पर पहुँचकर भावनाशील श्रोताओं को संबोधित किया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने युग निर्माण आन्दोलन के प्रति बस्तर के लोगों की श्रद्धा और समर्पण का हृदय से वंदन करते हुए कहा कि पवित्र और निर्मल हृदय में ही ईश्वर का प्रकाश उभरता है, शबरी और जटायु जैसे लोग ही अपने मन और भावनाओं को भगवद्अर्पण कर उनकी अहैतुकी कृपा प्राप्त करते हैं। उन्होंने इस युग के श्रीराम का संदेश देते हुए उनके साहित्य के रूप में विचार शरीर को घर-घर पहुँचा देने का आह्वान किया।

डॉ. चिन्मय जी ने जनशताब्दी वर्ष-2026 से जुड़े दायित्वों की याद दिलायी और कहा कि गुरुदेव ने इस मिशन को प्यार और सद्भाव से सींचा है। उनके सतयुगी सपनों को साकार करने के लिए हम सभी को तन, मन, धन से जुट जाना है। 3 से 6 फरवरी की तिथियों में आयोजित कार्यक्रम सम्पन्न कराने शान्तिकुञ्ज से श्री सुनील शर्मा की टोली पहुँची थी।

सुकमा की विशिष्ट यज्ञशाला में भाग ले रहे वनवासी

सैकड़ों संस्कार हुए :

सुकमा के 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में 47 पुंसवन, 95 नामकरण, 90 मुण्डन, 136 विद्यारंभ, 139 दीक्षा, 10 अन्नप्राशन और 41 आदर्श विवाह सम्पन्न हुए।

दीपयज्ञ ने अंतस में ज्योति जगाई :

11 हजार दीपों से सुसज्जित दीप महायज्ञ में हजारों भक्तों की आस्था को नई ऊँचाई दी। ये दीपक भगवान श्रीराम, गायत्री मंत्र, ओम आदि पवित्र अक्षरों के रूप में सजाए गए थे। इस अवसर पर उपस्थित जिला पंचायत अध्यक्ष हरीश कवासी और नगर पालिका अध्यक्ष राजू साहू ने इस यज्ञ में भागीदारी को अपना सौभाग्य बताया।

आद. डॉ. चिन्मय जी के संग मलकानगिरी प्रज्ञापीठ के परिजन

विविध मंदिरों में देवदर्शन :

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी सहित शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों ने श्री परदाशीन माता मंदिर, मातागुड़ी, राजवाड़ा सुकमा पहुँचकर दर्शन-पूजन करते हुए सर्वत्र सुख, शांति और कल्याण की प्रार्थना की। साथ ही उन्होंने भोजनालय और सप्तऋषि मंदिर का दर्शन किया और परिजनों से भेंट की।

सुकमा में आदरणीय डॉ. चिन्मय जी का परंपरागत स्वागत और उनके द्वारा भोजनालय में कार्यकर्त्ताओं के बीच पहुँचकर उनका उत्साहवर्धन

108 कुण्डीय महायज्ञ में वनवासियों को जीवन के सौभाग्य की याद दिलाई

चंदाहांडी, नवरंगपुर। ओडिशा

राष्ट्र निर्माण के महान लक्ष्य के लिए समर्पित लाखों युवाओं का मार्गदर्शन कर रहे देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी 03 फरवरी 2024 को नवरंगपुर जिले के चंदाहांडी में आयोजित 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ में पहुँचे। वहाँ उन्होंने उपस्थित हजारों साधकों को सम्बोधित किया।

आद. डॉ. चिन्मय जी ने यज्ञ में भाग ले रहे सरल हृदय वनवासियों को भगवान श्रीराम की ही तरह मानवता का भाग्य बदलने के लिए अवतरित युगऋषि श्रीराम शर्मा आचार्य जी के संकल्प के साथ जुड़ने के सौभाग्य का बोध कराया। उन्होंने कहा कि शबरी, रीछ, वानरों की तरह आप मूल रूप में देवता ही हैं, आवश्यकता नियमित गायत्री उपासना, साधना से उस देवत्व को जगाने की है। उन्होंने सभी को गुरुकार्य के प्रति श्रद्धा और समर्पण भाव को निरंतर बढ़ाते रहने के लिए प्रेरित किया, कहा कि हम सबको यज्ञ के प्रसाद के रूप में देवत्व को लेकर जाना है और उसे जीवनभर धारण करना है।

कार्यकर्त्ताओं के बीच पहुँचे : माँ भगवती भोजनालय, प्रदर्शनी आदि का अवलोकन करते हुए यज्ञकार्यों में निष्ठापूर्वक जुटे कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन करने भी पहुँचे।

सांसद, विधायक मिले

नवरंगपुर से सांसद श्री रमेश चंद्र मांझी, झारीगाम से विधायक श्री प्रकाश चंद्र मांझी एवं अनेक गणमान्य अतिथियों और नैष्ठिक परिजनों से भेंट की, उन्हें परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य भेंट किया।

प्राण प्रतिष्ठा : आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने चंदाहांडी में नवनिर्मित गायत्री शक्तिपीठ में मां गायत्री की प्राण प्रतिष्ठा की। ज्ञात हो कि चंदाहांडी में एक सामान्य-सी कुटी में शक्तिपीठ की स्थापना के बाद उसका विस्तार हुआ है।

वनवासियों द्वारा परंपरागत स्वागत तथा वह कुटी, जिसमें सर्वप्रथम शक्तिपीठ की स्थापना हुई थी

नए भवन का लोकार्पण

नवरंगपुर : आदरणीय डॉ. चिन्मय जी 3 फरवरी 2024 को गायत्री शक्तिपीठ नवरंगपुर पहुँचे। वहाँ उन्होंने गायत्री माता मंदिर में नवनिर्मित विश्वामित्र भवन का लोकार्पण किया। इस अवसर पर उपस्थित परिजनों को उन्होंने अनेक प्रगतिशील प्रेरणाएँ प्रदान कीं। उन्होंने कहा कि आज हमें परम पूज्य गुरुदेव जैसे महापुरुषों के विचारों से जुड़ने की आवश्यकता है। विचार बदलेंगे तो हमारा जीवन भी बदलता जायेगा, देखते ही देखते हमारा समाज स्वर्ग बन जाएगा।

इस अवसर पर नवरंगपुर के कलेक्टर भी उपस्थित रहे। जिन्हें शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने युगसाहित्य भेंट कर सम्मानित किया।

नवरंगपुर में परिजनों को संबोधित करते हुए

108 कुण्डीय महायज्ञ : दीपयज्ञ के अवसर पर दिया नवजागरण का संदेश

सेमलीगुड़ा : 3 फरवरी की सायंकाल सेमलीगुडा में आयोजित 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ में पहुँचे। वहाँ चल रहे विराट दीप महायज्ञ में हजारों श्रद्धालु उपस्थित थे। इस भावनाशील जनमानस को संबोधित करते हुए आद. डॉ. चिन्मय जी ने युग परिवर्तन की इस विशिष्ट वेला में भागवत्चेतना के सान्निध्य के सौभाग्य को पहचानने और सुरदुर्लभ अवसर का लाभ लेने का आह्वान किया। उन्होंने दीपयज्ञ की दिव्यता से अनुप्राणित होने की प्रेरणा देते हुए कहा कि जागना हो तो व्यक्ति के लिए बोध का एक क्षण पर्याप्त है।

कार्यक्रम के समापन में प्रबुद्ध वर्ग के सम्मान का क्रम भी सम्पन्न हुआ।

सेमलीगुडा में दीपयज्ञ के अवसर पर श्रद्धालुओं को संबोधित करते डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

प्रज्ञा संस्थानों में दर्शन-पूजन प्रार्थना

जीवन के बुझते दीपों में नव ज्योति जगाने के संकल्प के साथ आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी 4 फरवरी 2024 को सेमलीगुड़ा, कोरापुट, बरगुड़ा, मलकानगिरी के गायत्री संस्थानों में पहुँचे और वहाँ परिजनों से भेंट की। उन्होंने मलकानगिरी के माँ भैरवी मंदिर में पूजा करते हुए विश्व शांति की प्रार्थना भी की।

मार्ग में स्वागत समारोह : अगला कार्यक्रम सेमलीगुड़ा में था। मार्ग में बोरीगुम्मा और कोरापुट में स्थानीय कार्यकर्त्ताओं द्वारा स्वागत समारोह रखे गए थे।

माननीय लोकसभा अध्यक्ष को अश्वमेध महायज्ञ का आमंत्रण दिया

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने 5 फरवरी को नई दिल्ली में माननीय लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला जी से मुलाकात कर उन्हें मुम्बई अश्वमेध महायज्ञ की कार्य प्रगति से अवगत कराया, आमंत्रित किया। इस महान अनुष्ठान के माध्यम से राष्ट्र की चेतना के उन्नयन की योजनाओं पर गहन विचार-विमर्श किया।

ईश्वर के साथ सम्बंध जुड़ जाने पर भय, शंका, संदेह अथवा संकीर्णता दूर होकर आपको निर्भयता और शक्ति प्राप्त होती है और आप में दिव्यता का प्रकाश होने लगता है। - स्वेट मार्डन

छत्तीसगढ़ में महायज्ञ तथा विशिष्ट कार्यक्रमों से आस्था का उन्नयन

'अप्प दीपो भव' की प्रेरणा से आलोकित हुई माता दंतेश्वरी की नगरी

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी दंतेवाड़ा में आयोजित 108 कुण्डीय यज्ञ के दीपयज्ञ में भाग ले रहे श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए

दंतेवाड़ा। छत्तीसगढ़

2 से 5 फरवरी की तिथियों में नगर के हाईस्कूल मैदान में 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी दिनांक 4 फरवरी को विराट दीप महायज्ञ में भाग ले रहे श्रद्धालुओं को युगऋषि का संदेश देने पहुँचे। दंतेवाड़ा पहुँचने पर बस्तर की लोक संस्कृति के अनुरूप युगऋषि के अग्रदूत का भव्य स्वागत हुआ।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने दीपयज्ञ की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए दीपक से प्रेरणा लेने और सुरदुर्लभ मानव जीवन को दीपक की भाँति ज्योतित कर समाज में सद्भावों का प्रकाश फैलाने की प्रेरणा दी। उन्होंने परमार्थ के भाव के साथ विश्व मानवता के उत्थान के लिए आगे बढ़ने का आह्वान किया। कार्यक्रम के समापन में प्रबुद्ध वर्ग के सम्मान का क्रम भी सम्पन्न हुआ।

चार दिवसीय कार्यक्रम का शुभारंभ 1151 कलशों की शोभायात्रा के साथ हुआ। समग्र कार्यक्रम राष्ट्र चेतना के जागरण और नारी सशक्तीकरण का संदेश देने वाला था। बस्तर के लाखों श्रद्धालुओं ने इसमें भाग लेकर पुण्य लाभ लिया। महायज्ञ में दिव्य जीवन संघ शाखा गुमरगुंडा के अध्यक्ष स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती, विमल सुराना, अवधेश गौतम, विनोद सिंह, डॉ. जगदम्बा पंडा, बीरबल ठाकुर, ओजस्वी भीमा मंडावी आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

बाईक रैली ने की अगुवानी

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी की अगुवानी बाईक रैली के साथ की गई। माई दंतेश्वरी मंदिर से सर्किट हाउस तक निकाली गई रैली के जयघोषों ने पूरे क्षेत्र को गुंजायमान कर दिया।

माई दंतेश्वरी का दर्शन-पूजन

आद. डॉ. चिन्मय जी ने दंतेवाड़ा पहुँचने पर सर्वप्रथम उन्होंने नगर की अधिष्ठात्री दंतेश्वरी माता के अतिप्राचीन मंदिर और निकटस्थ गायत्री शक्तिपीठ में दर्शन कर सर्वमंगल की प्रार्थना की।

दीपयज्ञ के अवसर पर लोकवाद्यों के साथ आनन्द की अभिव्यक्ति करते कलाकार

जहाँ-जहाँ चरण पड़े गुरुवर के

श्रीराम शिला के दिव्य दर्शन और ध्यान की अलौकिक अनुभूतियाँ

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने तीर्थ क्षेत्र के रूप में विकसित करने की प्रेरणा दी

सुकमा, बस्तर। छत्तीसगढ़

परम पूज्य गुरुदेव का लिखा एक गीत है-

तुम ना घबराओ न आँसू ही बहाओ अब,
और कोई हो न हो पर मैं तुम्हारा हूँ।
मैं तुम्हारे घाव धो मरहम लगाऊँगा,
मैं खुशी के गीत गा-गा कर सुनाऊँगा।

सन् 1980 के दशक में, जब आवागमन के साधन भी सुलभ नहीं थे, तब परम पूज्य गुरुदेव यही संदेश लेकर देश के अनेक दुर्गम क्षेत्रों में पहुँचे और वहाँ प्रज्ञा संस्थानों की स्थापना की थी। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की टोली अपने प्रस्तुत छत्तीसगढ़ प्रवास में सुकमा के एक ऐसे ही एक दिव्य स्थल के दर्शन कर भावविभोर हो गई।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि 4 फरवरी 2024 को सुकमा के समीप चिंगावरम नामक स्थान पर पहुँचे थे। यह नदी तट पर स्थित सघन वृक्षों से आच्छादित वह दिव्य स्थान है, जहाँ 26 दिसंबर 1981 को परम पूज्य गुरुदेव पधारे थे। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने नदी के मध्य में चट्टान पर कुछ देर रुककर ध्यान करते हुए पूज्य गुरुदेव के प्रत्यक्ष सान्निध्य जैसी दिव्य ऊर्जा का अनुभव किया। दिव्य भूमि के दर्शन का परम सौभाग्य पाकर सभी परिजन भावविभोर हो गए। डॉ. चिन्मय जी ने इस चट्टान का नाम 'श्रीराम शिला' रखकर दंतेवाड़ा और सुकमा के समर्पित स्वजनों को उस स्थान के विकास की प्रेरणा और मार्गदर्शन दिया, संकल्प कराया। उन्होंने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव ने इतनी प्रतिकूलताओं के बीच भी गाँव-गाँव जाकर गायत्री परिवार को अपने स्नेह से सींचा है। हम सभी को उनके विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प लेना है।

ऐतिहासिक तीर्थ श्रीराम शिला का दर्शन-पूजन

रायपुर में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने विशिष्ट गणमान्यों को दिया मुम्बई अश्वमेध महायज्ञ का आमंत्रण

रायपुर। छत्तीसगढ़

ओडिशा-छत्तीसगढ़ प्रवास का समापन रायपुर में अनेक गणमान्यों से मुलाकात के साथ हुआ। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने सभी को मिशन की गतिविधियों का परिचय दिया। मुम्बई में आयोजित हो रहे अश्वमेध महायज्ञ की दृष्टि से यह मुलाकात विशेष थी। सभी महानुभावों को अश्वमेध महायज्ञ का आमंत्रण दिया, साथ ही नवयुग सृजन के महान अभियान में सहयोगी बनने का आह्वान किया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने रायपुर में भाजपा की सुश्री लता उसेंडी जी, छत्तीसगढ़ शासन में वित्त मंत्री श्री ओ.पी. चौधरी जी, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा, वाणिज्यिक कर एवं श्रम मंत्री श्री अमर अग्रवाल जी, पूर्व नेता प्रतिपक्ष श्री नारायण चंदेल जी, सांसद सुश्री सरोज पांडे जी से मुलाकात की।

छत्तीसगढ़ के वित्त मंत्री माननीय ओ.पी. चौधरी जी को से मुलाकात

मंत्री मान. श्री अमर अग्रवाल जी एवं सांसद माननीय सरोज पाण्डेय

नेता प्रतिपक्ष मान. श्री नारायण चंदेल व सुश्री लता उसेण्डी को दिया आमंत्रण

फार्म-4

प्रकाशन का स्थान : हरिद्वार
प्रकाशन की अवधि : पाक्षिक
प्रकाशक का नाम : श्रीमती शैलबाला पण्ड्या
प्रकाशक का पता : श्रीरामपुरम, गायत्री नगर, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
क्या भारत का नागरिक है? : हाँ, भारतीय
मुद्रक का नाम : उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखण्ड)
सम्पादक का नाम : प्रमोद शर्मा
सम्पादक का पता : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
क्या भारत का नागरिक है? : हाँ, भारतीय
उन व्यक्तियों के नाम व पते, जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझीदार हों। श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टी.एम.डी.), शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार, उत्तराखण्ड

मैं श्रीमती शैलबाला पण्ड्या एतद्द्वारा घोषित करती हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के आधार पर उपरोक्त विवरण सत्य है।

दिनांक-01.3.2024 प्रकाशक का हस्ताक्षर
श्रीमती शैलबाला पण्ड्या

माँ गायत्री की पुनः प्रतिष्ठा से वातावरण में हुआ दिव्यता का संचार

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी प्राण प्रतिष्ठा के बाद परिजनों में नवचेतना का संचार करते हुए

जगदलपुर। छत्तीसगढ़

जगदलपुर में परम पूज्य गुरुदेव ने सन् 1981 में गायत्री शक्तिपीठ की प्राण प्रतिष्ठा की थी। समय के साथ बढ़ती आवश्यकताओं को देखते हुए इन दिनों गायत्री शक्तिपीठ का नवनिर्माण किया गया। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी 5 फरवरी 2024 को वहाँ पहुँचे और माँ गायत्री की पुनः प्रतिष्ठा की। उन्होंने शक्तिपीठ के प्रथम तल पर माँ गायत्री की प्राण प्रतिष्ठा करते हुए युगचेतना के विस्तार में मिले सुअवसर को अपना सौभाग्य बताया। उन्होंने सभी परिजनों से गुरुसत्ता के प्रति समर्पित भाव से सक्रिय होकर इस दुर्लभ सौभाग्य का लाभ उठाने का निवेदन किया।

नवनिर्मित शक्तिपीठ में प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम 9 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। केसरिया वस्त्र धारण किये सैकड़ों बहिनों एवं कन्याओं ने नगर में शक्तिकलश शोभायात्रा के साथ प्राण प्रतिष्ठा समारोह का शुभारंभ किया। वीरांगनाओं के रूप में सजी बालिकाओं की झाँकी इस कलश यात्रा का प्रमुख आकर्षण थी।

प्राण प्रतिष्ठा के मायने : आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने गर्भगृह में माँ गायत्री, सावित्री और माँ दुर्गा की प्राण प्रतिष्ठा के बाद कहा कि अंतरतम में ऊर्जा का प्रवाह ही प्राण है, इसे सदैव जाग्रत् और उद्दीप्त रखें, यही उसकी प्रतिष्ठा है।

सम्मान : आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने प्राण प्रतिष्ठा के लिए दो वर्षों से पूरी निष्ठा और समर्पण भाव से सक्रिय ट्रस्ट मण्डल, निर्माण समिति के सदस्य और इस महोत्सव को सफल बनाने वाले परिजनों का सम्मान किया।

संस्कार : इस अवसर पर यज्ञोपवीत और पुंसवन संस्कार भी बड़ी संख्या में सम्पन्न हुए।

प्राण प्रतिष्ठा समारोह में मुख्य ट्रस्टी जयश्री श्रीवास्तव, लेखराम साहू, पूर्व विधायक श्री रेखचंद जैन, नरेन्द्र गोयल, विकास श्रीवास्तव आदि अनेक गणमान्य उपस्थित थे।

जैसे सूर्य का प्रकाश अलग-अलग घरों में जाकर भिन्न नहीं हो जाता, उसी प्रकार से ईश्वर की महान आत्मा पृथक-पृथक जीवों में प्रविष्ट होकर विभिन्न नहीं होतीं। - महर्षि रमण

वसंत पर्व पर शान्तिकुञ्ज में छाई युग परिवर्तन की उमंग

वसंत तमस को तोड़ने और रजस को सतोगुण में रूपांतरित करने का संदेश लेकर आता है। आप भी अपने को बदल लीजिए।- आद. डॉ. प्रणव जी

वसंत नयापन लेकर आता है। वसंत तमस को तोड़ने और रजस को सतोगुण में बदलने के लिए आता है। आप भी अपने को बदल लीजिए। हताशा, निराशा के पतझड़ को उमंग, उल्लास में बदल लीजिए।

तमस को तोड़ने के लिए तप-साधना की आवश्यकता होती है। तप के साथ जीवन बार-बार भस्मसात होता जाता है। मनुष्य की आकृति वही रहती है, लेकिन प्रकृति बदलती जाती है। बदलती प्रकृति के साथ पता चलता है कि जीवन बदल रहा है।

अभी तमस शेष है, जगत में अंधेरा है, मनोरोगों की बाढ़ है, व्यसन बढ़ रहे हैं। हमें गुरुदेव के विचारों को, गायत्री को घर-घर पहुँचाकर इस तमस को तोड़ना होगा।

गुरुस्मारक 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' पर पुष्पांजलि अर्पित करते श्रद्धेय डॉक्टर साहब एवं श्रद्धेया शैल जीजी

वसंत सौंदर्य ही नहीं बढ़ाता, शौर्य भी जगाता है।

श्रद्धेया जीजी ने कहा कि वसंत केवल सौन्दर्य बढ़ाने नहीं आता, वह शौर्य बढ़ाने भी आता है। परम पूज्य गुरुदेव के आध्यात्मिक जन्म दिवस पर उन्होंने शौर्य की उत्कृष्ट परम्पराओं का स्मरण कराते हुए कहा कि जब वीर बालक हकीकत राय के जीवन में वसंत आता है तो वह आततायियों के आगे झुककर धर्म परिवर्तन करने की अपेक्षा अपना सिर कटा लेता है। युवा भगत सिंह राष्ट्र देवता की वंदना करते हुए फाँसी पर चढ़ जाते हैं। राम जंगल में हड्डियों का ढेर देखकर धरती को निशिचर विहीन करने का प्रण लेते हैं। भगीरथ अतृप्त आत्माओं की शान्ति के लिए तप करने चल पड़ते हैं। परम पूज्य गुरुदेव अपना जीवन मानवता के उत्थान के लिए समर्पित कर देते हैं। श्रद्धेया जीजी ने कहा कि आज का दिन इसी राह पर चल पड़ने का संकल्प लेने का दिन है।

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज में ज्ञान, कला और संवेदनाओं की देवी माँ सरस्वती का अवतरण पर्व और युगऋषि परम पूज्य पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी का बोध दिवस परंपरागत कार्यक्रमों के साथ अत्यंत आनन्द और उल्लासपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर श्रद्धेय डॉक्टर साहब एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने अत्यंत मार्मिक प्रेरणाएँ दीं।

श्रद्धेय डॉक्टर साहब ने कहा कि इन दिनों नए विश्व का आधार प्रकट हो रहा है, विश्व का नेतृत्व भारत को करना है। उन्होंने कहा कि यह परिवर्तन साधक ही लेकर आएँगे।

तीन वर्ष विशिष्ट तप के

श्रद्धेय डॉक्टर साहब ने कहा कि इक्कीसवीं सदी की तप साधना 24वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। सन् 24 से अखण्ड ज्योति के प्राकट्य एवं परम वंदनीया माताजी के जन्म की शताब्दी-2026 तक का समय विशेष है। इस समय में प्रकृति कलयुग की कालिमा को छोड़कर सतयुग के शुभ वस्त्र धारण करेगी। युग परिवर्तन के प्रयास अपने अंतिम चरण में हैं। लक्ष्य तक पहुँचने के लिए हमें कठिन तप करना पड़ेगा।

पर्व के दिन विशेष कार्यक्रमों का शुभारंभ अरुणोदय की वेला में धर्म ध्वजारोहण के साथ हुआ। श्रद्धेया शैल जीजी एवं श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी ने ध्वज पूजन-वंदन के पश्चात् ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर उपस्थित सैकड़ों केसरिया वस्त्रधारी साधकों ने गीत 'ओ धर्म की पताका फहरो ...' के संग ध्वजवंदन करते हुए अपने उल्लास की अभिव्यक्ति की। इस अवसर पर आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, आदरणीया शेफाली जीजी, आदरणीय श्री शिव प्रसाद मिश्रा जी सहित वरिष्ठ-कनिष्ठ कार्यकर्त्ता उपस्थित रहे।

ध्वजारोहण के पश्चात् श्रद्धेय द्वय ने ऋषियुग्म परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी की प्रखर प्राण चेतना के संवाहक उनके स्मारक 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' पर पहुँचकर अपनी भावभरी पुष्पांजलि-श्रद्धांजलि अर्पित की।

अखिल विश्व गायत्री परिवार का प्रतिनिधित्व करते हुए श्रद्धेया शैल जीजी तथा श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी ने वसंत पर्व का विशेष पूजन सम्पन्न किया। इस क्रम में उन्होंने माता गायत्री के साथ नवयुग के शिल्पकार परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी, माता सरस्वती, उनकी वीणा और वाहन मयूर के साथ वसंत के प्रतीक सरसों के फूलों का पंचोपचार पूजन सम्पन्न किया।

पर्व पूजन का कर्मकाण्ड शान्तिकुञ्ज के स्वयंसेवी कार्यकर्त्ता श्री उदयकिशोर मिश्रा, डॉ. गायत्री किशोर त्रिवेदी ने सम्पन्न कराया। सर्वश्री ओंकार पाटीदार, शिव नारायण जी, राजकुमार वैष्णव, नारायण रघुवंशी, वसंत यादव ने प्रज्ञागीतों के माध्यम से वासंती प्रेरणाओं का संचार किया।

विश्वस्तरीय चालीस दिवसीय साधना अनुष्ठान संकल्प

हर वर्ष वसंत पंचमी से होली पूर्णिमा तक के 40 दिनों में पूरे विश्व में गायत्री परिवार के नैष्ठिक साधक सवा लक्ष गायत्री महामंत्र जप अनुष्ठान सम्पन्न करते हैं। श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी ने पर्व पूजन के पश्चात ऑनलाइन इसका संकल्प कराया।

हजारों लोगों ने दीक्षा ली, 350 यज्ञोपवीत और 17 विवाह संस्कार हुए

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज में वंसत के पावन पर्व पर 17 जोड़ों ने युगऋषि द्वारा बताई गृहस्थ जीवन की मार्मिक प्रेरणाओं को हृदयंगम करते हुए विवाह संस्कार के माध्यम से गृहस्थ जीवन में प्रवेश किया। लगभग 350 यज्ञोपवीत संस्कार हुए। सैकड़ों लोगों ने मुण्डन संस्कार कराए। जीवन में आध्यात्मिक चेतना का संचार करने वाली पुण्य वेला-वसंत पर्व के दिन श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी के श्रीमुख से हजारों लोगों ने गायत्री महामंत्र की दीक्षा ली।

श्रद्धेया जीजी, श्रद्धेय डॉक्टर साहब सत्संग भवन में उपस्थित युग साधकों को दीक्षा देते हुए

दीप महायज्ञ : सायंकाल दीप महायज्ञ के साथ परम पूज्य गुरुदेव का बोध दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इसका संचालन शान्तिकुञ्ज की ब्रह्मवादिनी बहिनों की टोली ने किया।

अश्वमेध महायज्ञ स्थल में उल्लासपूर्वक मना वसंतोत्सव

मायानगरी मुंबई को आध्यात्मिक नगरी में रूपांतरित कर रहा है गायत्री परिवार

नवी मुंबई। महाराष्ट्र

अश्वमेध महायज्ञ स्थल खारघर में निर्माण कार्यों में जुटे शान्तिकुञ्ज के कार्यकर्त्ताओं और देशभर से आकर समयदान कर रहे लगभग 5000 कार्यकर्त्ताओं ने वसंत पर्व उल्लासपूर्वक मनाया। नौ कुण्डीय महायज्ञ के साथ मनाए गए वसंतोत्सव में भाग लेते हुए सभी ने महाराष्ट्र के नवोन्मेष के लिए, राष्ट्र को संगठित करने और सशक्त बनाने के लिए विशेष प्रार्थना के साथ यज्ञ भगवान को आहुतियाँ समर्पित कीं।

यज्ञ स्थल पर वसंत पर्व के कार्यक्रमों का शुभारंभ अश्वमेध महायज्ञ समिति के प्रमुख श्री शरद पारधी द्वारा धर्म ध्वजारोहण के साथ हुआ। यज्ञ के आरंभ में ज्ञान और कला की देवी माता सरस्वती, माता गायत्री के साथ करोड़ों हृदयों में वासंती प्रेरणाओं का संचार करने वाले परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी, परम वंदनीया माताजी का विशिष्ट पूजन किया गया। उल्लेखनीय है गायत्री परिवार द्वारा वसंत पर्व परम पूज्य गुरुदेव के बोध दिवस के रूप में भी मनाया जाता है।

अश्वमेध यज्ञ भूमि पर मना वसंत पर्व : नौ कुण्डीय यज्ञ में भागीदारी व नए भोजनालय का शुभारंभ

पर्वपूजन एवं यज्ञ का संचालन करते हुए श्री परमानन्द द्विवेदी ने गायत्री परिवार के अश्वमेध यज्ञ अभियान को अयोध्या में राम लला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद रामराज्य की स्थापना हेतु किया जा रहा विराट आध्यात्मिक प्रयोग बताया।

शान्तिकुञ्ज से श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी द्वारा ऑनलाइन दिया गया संदेश यज्ञ स्थल पर प्रसारित किया गया, जिसमें उन्होंने अश्वमेध महायज्ञ के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए माया नगरी मुंबई को अध्यात्म की नगरी बनाने की प्रेरणा देने वाला विराट अनुष्ठान बताया।

सायंकाल भव्य दीप महायज्ञ सम्पन्न हुआ। दिन-दिन बढ़ती स्वयंसेवकों की संख्या को देखते हुए वसंत पंचमी से कार्यक्रम स्थल पर एक और भोजनालय का शुभारंभ हुआ। जे.कुमार कंपनी के एजीएम श्री राजेन्द्र प्रभाकर पाटील ने नए भोजनालय का शुभारंभ किया।

वसंत पर्व पर साहित्य विमोचन

स्मृतिसमुच्चय-एक दृष्टि (सरल हिन्दी भावार्थ सहित)

सर्वविदित है कि स्मृतियाँ एवं धर्मशास्त्र हिन्दुओं के सम्पूर्ण धर्म-कर्म के विधान हैं। हिन्दुओं के राजस्वकाल में राजा लोग स्मृतियों के अनुसार राजप्रबन्ध एवं अभियोगों का विचार करते थे, स्मृतियाँ ही तात्कालिक कानून और संविधान की पुस्तकें हुआ करती थीं। स्मृतियों के बताये मार्ग पर ही जीवनव्यवहार चलता था तथा चूक होने पर स्मृतियों के अनुसार ही पश्चात्ताप, भूल सुधार प्रायश्चित्त एवं इष्टापूर्ति करते थे।

वर्तमान समय में भी स्मृतियाँ व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का नैतिक मार्गदर्शन करने की दृष्टि से उतनी ही महत्त्वपूर्ण हैं, जितनी प्राचीन काल में हुआ करती थीं। इसीलिए परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने आर्ष साहित्य प्रकाशन के क्रम में स्मृतिसमुच्चय का सरल हिन्दी भावार्थ सहित प्रकाशन किया है। वेद विभाग, शान्तिकुञ्ज द्वारा वसंत पंचमी संवत् 2080 के दिन इसका संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण प्रकाशित किया गया है। इसका लाभ उठायें, जीवन को श्रेष्ठ से श्रेष्ठतर बनाने की दृष्टि से यह बहुत उपयोगी सिद्ध होगा। **मूल्य : ₹400/-**

2. छत्तीसगढ़ी भाषा में अनुवादित पू.गुरुदेव की लिखी 31 पुस्तकें। अनुवाद शान्तिकुंज के जीवनदानी कार्यकर्त्ता श्री पुनीत राम गुरुवंश ने किया है।

3. 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' की वेबसाइट https:agsp-awgp.org

शिविर सूचना

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज के तत्त्वावधान में जन्मभूमि **आँवलखेड़ा (जिला आगरा, उ.प्र.) तथा सुन्दरबनी (जम्मू-कश्मीर)** स्थित गायत्री शक्तिपीठों में विशेष पाँच दिवसीय और नौ दिवसीय साधना शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। यह उच्च स्तरीय साधना शिविर हैं, जिनमें जीवन साधना के लिए निर्धारित समस्त नियमों का पालन आवश्यक होगा। आवेदन के लिए लॉगऑन कीजिए : www.awgp.org/shivir

इस वेबसाइट पर आवेदन फॉर्म, शिविर के अनुशासन, नियमावली, कार्यक्रम विवरण आदि उपलब्ध हैं। शान्तिकुञ्ज से स्वीकृति प्राप्त होने के बाद ही साधक इन शिविरों में भाग ले सकेंगे।

साधना शिविर की तिथियाँ :

आँवलखेड़ा : 1 से 9 मार्च 2024 तथा 15 से 24 मार्च 2024
9 से 17 मार्च 2024 (नवरात्र साधना सत्र)

सुन्दरबनी : 8 से 13 मार्च 2024 तथा 19 से 24 मार्च 2024
9 से 17 मार्च 2024 (नवरात्र साधना सत्र)

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। **संपादक**- प्रमोद शर्मा। **पता** :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 01334-311004
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार भेजने के लिए
ई-मेल : news@awgp.org

Publication date: 27.02.2024
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26